उड़ान

शिक्षा की

भाग 4

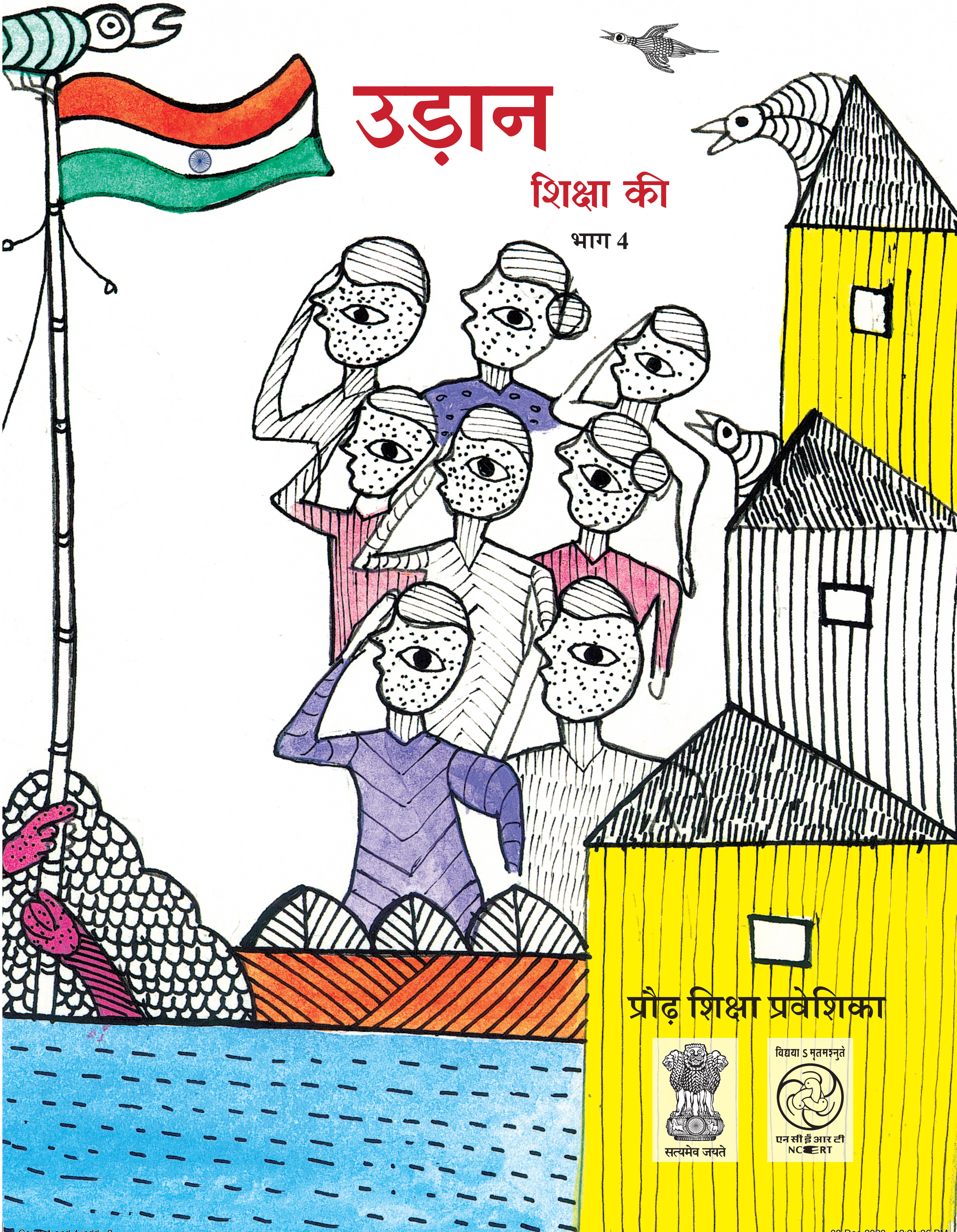

प्रौढ़ शिक्षा प्रवेशिका

सत्यमेव जयते

विद्यया ऽमृतमश्नुते

एन सी ई आर टी
NCERT

Cover 1 and 4.indd 2 08-Dec-2020 12:21:26 PM

उड़ान
शिक्षा की

भाग 4

प्रौढ़ शिक्षा प्रवेशिका

विद्यया ऽमृतमश्नुते

एन सी ई आर टी
NCERT

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्
NATIONAL COUNCIL OF EDUCATIONAL RESEARCH AND TRAINING

Prelims..indd 1 08-Dec-2020 12:17:06 PM

प्रथम संस्करण
दिसंबर 2020 अग्रहायण 1942

PD

© राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, 2020

सर्वाधिकार सुरक्षित

- प्रकाशक की पूर्व अनुमति के बिना इस प्रकाशन के किसी भाग को छापना तथा इलैक्ट्रॉनिकी, मशीनी, फ़ोटोप्रतिलिपि, रिकॉर्डिंग अथवा किसी अन्य विधि से पुन: प्रयोग पद्धति द्वारा उसका संग्रहण अथवा प्रचारण वर्जित है।
- इस पुस्तक की बिक्री इस शर्त के साथ की गई है कि प्रकाशन की पूर्व अनुमति के बिना यह पुस्तक अपने मूल आवरण अथवा जिल्द के अलावा किसी अन्य प्रकार से व्यापार द्वारा उधारी पर, पुनर्विक्रय या किराए पर न दी जाएगी, न बेची जाएगी।
- इस प्रकाशन का सही मूल्य इस पृष्ठ पर मुद्रित है। रबड़ की मुहर अथवा चिपकाई गई पर्ची (स्टिकर) या किसी अन्य विधि द्वारा अंकित कोई भी संशोधित मूल्य गलत है तथा मान्य नहीं होगा।

एन. सी. ई. आर. टी. के प्रकाशन प्रभाग के कार्यालय

एन.सी.ई.आर.टी. कैंपस
श्री अरविंद मार्ग
नयी दिल्ली 110 016 फ़ोन : 011-26562708

108, 100 फ़ीट रोड
हेली एक्सटेंशन, होस्डेकेरे
बनाशंकरी III इस्टेज
बेंगलुरु 560 085 फ़ोन : 080-26725740

नवजीवन ट्रस्ट भवन
डाकघर नवजीवन
अहमदाबाद 380 014 फ़ोन : 079-27541446

सी.डब्ल्यू.सी. कैंपस
निकट: धनकल बस स्टॉप पिनहटी
कोलकाता 700 114 फ़ोन : 033-25530454

सी.डब्ल्यू.सी. कॉम्प्लैक्स
मालीगाँव
गुवाहाटी 781021 फ़ोन : 0361-2676869

प्रकाशन सहयोग

अध्यक्ष, प्रकाशन प्रभाग : *अनूप कुमार राजपूत*

मुख्य संपादक : *श्वेता उप्पल*

मुख्य उत्पादन अधिकारी : *अरुण चितकारा*

मुख्य व्यापार प्रबंधक (प्रभारी) : *विपिन दिवान*

ले-आउट एवं डिज़ाइन
श्वेता राव
बैनियन ट्री

डिजिटल प्रिंट

सचिव, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, श्री अरविंद मार्ग, नयी दिल्ली 110 016 द्वारा प्रकाशन प्रभाग में प्रकाशित।

आमुख

प्रौढ़ शिक्षा का उद्देश्य उन व्यक्तियों को पढ़ने-लिखने के अवसर उपलब्ध कराना है जिनकी उम्र 15 साल या उससे अधिक है। इस अभियान में वे सभी बच्चे, युवा, वयस्क, प्रौढ़ शामिल हैं जो किन्हीं कारणों से या तो स्कूल नहीं जा सके या फिर किन्हीं कारणों से उन्हें स्कूल छोड़ना पड़ा। इस आयु-वर्ग के व्यक्ति अपने जीवन के अलग-अलग संदर्भों में अपनी भाषा या भाषाओं का इस्तेमाल भी करते हैं और गणितीय समझ के साथ अपने-अपने कामों में बखूबी लेन-देन भी करते हैं। यह संभव है कि ये सभी अपने-अपने जीवन की विभिन्न परिस्थितियों में उचित तरीके से व्यवहार और कार्य करते हों, सही तरह से निर्णय लेते हों और समाज में एक उपयोगी सदस्य की भूमिका निभाते हों।

भारतीय राष्ट्रीय साक्षरता अभियान में, 'साक्षरता' को एक व्यापक परिप्रेक्ष्य में देखा गया। जिसमें 'साक्षरता' मात्र अक्षर-ज्ञान तक सीमित नहीं है, बल्कि इसे 'अर्थ' के साथ जोड़ते हुए इसके आयामों को विस्तार दिया गया है।

'बुनियादी साक्षरता प्राप्त करना, शिक्षा प्राप्त करना और जीविकोपार्जन का अवसर प्रत्येक नागरिक का अधिकार है। साक्षरता और बुनियादी शिक्षा, किसी के वैयक्तिक, नागरिक, आर्थिक और जीवनपर्यंत शिक्षा के अवसरों की एक नवीन दुनिया खोल देती है। यह नवीन दुनिया व्यक्ति को निजी और व्यावसायिक, दोनों ही स्तरों पर आगे बढ़ाने में मदद करती है।' राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के इस परिप्रेक्ष्य को ध्यान में रखते हुए शिक्षा मंत्रालय के पढ़ना-लिखना अभियान के अंतर्गत वयस्क शिक्षार्थियों के लिए चार प्रवेशिकाओं का निर्माण किया गया है। ये प्रवेशिकाएँ समेकित रूप में बनाई गई हैं, जिसमें भाषा और गणित, दोनों शामिल हैं। विषय सामग्री के रूप में 13 विषय (थीम) तय किए गए हैं जो आमतौर पर हमारे आस-पास दिखाई देते हैं। ये विषय हैं— परिवार ओर पड़ोस, बातचीत, पर्यावरण, स्वास्थ्य और स्वच्छता, कानूनी साक्षरता, वित्तीय साक्षरता, आपदा प्रबंधन, डिजिटल साक्षरता आदि। भाषा के अंतर्गत इन्हीं विषयों से जुड़ी सार्थक, समग्र और रोचक सामग्री को लेते हुए, हिंदी भाषा और अंकगणित को पढ़ने-लिखने के अवसर जुटाए गए हैं। वयस्क शिक्षार्थियों के पढ़ने-लिखने और अंकगणित सीखने में मदद के लिए एक निर्देशिका का भी निर्माण किया गया है। यह निर्देशिका शिक्षकों/सुगमकर्ताओं द्वारा उपयोग में लाई जाएगी जो शिक्षार्थियों के सीखने में मदद करेगी। इस निर्देशिका में साक्षरता का व्यापक परिप्रेक्ष्य, भाषा व गणित सीखने के उद्देश्य, संप्राप्ति, सीखने-सिखाने की प्रक्रिया और आकलन पर विस्तृत चर्चा की गई है। प्रवेशिकाओं और निर्देशिका में दिए गए बिंदु सुझाव के तौर पर हैं। शिक्षार्थियों की स्थानीय अपेक्षाओं को ध्यान में रखते हुए इनमें आवश्यकतानुसार बदलाव किया जा सकता है।

इस साक्षरता में 'आजीवन शिक्षा' का भाव भी कहीं न कहीं समाहित है। अतः इन प्रवेशिकाओं के माध्यम से यह प्रयास किया गया है कि वयस्क शिक्षार्थियों के लिए विभिन्न प्रकार की दृश्य-श्रव्य सामग्री का निर्माण किया जाए।

परिषद्, प्रवेशिकाओं और निर्देशिका के निर्माण में शामिल सभी विषय-विशेषज्ञों और परिषद् के संकाय सदस्यों, परियोजना-स्टाफ़ के अथक परिश्रम के लिए कृतज्ञता व्यक्त करती है। साथ ही उन सभी रचनाकारों, संस्थाओं के प्रति भी कृतज्ञ है जिन्होंने अपनी सामग्री और सहयोगियों की मदद लेने में हमें उदारतापूर्वक सहयोग दिया। हम इन प्रवेशिकाओं को और अधिक बेहतर बनाने के लिए आपके सुझावों का स्वागत हैं।

श्रीधर श्रीवास्तव
निदेशक
राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्

नयी दिल्ली
दिसंबर, 2020

Prelims..indd 4 08-Dec-2020 12:17:07 PM

पुस्तक निर्माण समिति

अध्यक्ष

श्रीधर श्रीवास्तव, *प्रोफ़ेसर* एवं *संयुक्त निदेशक,* एन.सी.ई.आर.टी., नयी दिल्ली

परामर्श

अनूप कुमार राजपूत, *प्रोफ़ेसर* एवं *अध्यक्ष,* प्रकाशन प्रभाग, एन.सी.ई.आर.टी., नयी दिल्ली
रंजना अरोड़ा, *प्रोफ़ेसर* एवं *अध्यक्ष,* अध्यापक शिक्षा विभाग, एन.सी.ई.आर.टी., नयी दिल्ली
संध्या सिंह, *प्रोफ़ेसर* एवं *अध्यक्ष,* भाषा शिक्षा विभाग, एन.सी.ई.आर.टी., नयी दिल्ली

समीक्षा समिति

अंजुम सीबिया, *प्रोफ़ेसर* एवं *डीन* (अकादमिक), एन.सी.ई.आर.टी., नयी दिल्ली
अशोक कुमार श्रीवास्तव, *प्रोफ़ेसर* एवं *डीन* (शोध), एन.सी.ई.आर.टी., नयी दिल्ली
गौरी श्रीवास्तव, *प्रोफ़ेसर,* सामाजिक विज्ञान शिक्षा विभाग, एन.सी.ई.आर.टी., नयी दिल्ली
दिनेश कुमार सिंह, *प्रोफ़ेसर,* विज्ञान एवं गणित शिक्षा विभाग, एन.सी.ई.आर.टी., नयी दिल्ली
श्वेता उप्पल, *मुख्य संपादक,* प्रकाशन प्रभाग, एन.सी.ई.आर.टी., नयी दिल्ली
सरोज यादव, *प्रोफ़ेसर* एवं *डीन* (भूतपूर्व) (अकादमिक), एन.सी.ई.आर.टी., नयी दिल्ली

हिंदी भाषा

वर्षा सिंघल, *टीचर फ़ैलो,* प्रारंभिक साक्षरता कार्यक्रम, डी.ई.ई., एन.सी.ई.आर.टी., नयी दिल्ली
सोनिका कौशिक, *वरिष्ठ परामर्शदाता,* प्रारंभिक साक्षरता कार्यक्रम, डी.ई.ई., एन.सी.ई.आर.टी., नयी दिल्ली

गणित

उज़्मा, *परामर्शदाता,* प्रारंभिक स्कूली गणित कार्यक्रम, डी.ई.ई., एन.सी.ई.आर.टी., नयी दिल्ली
गुंजन खुराना, *परामर्शदाता,* प्रारंभिक स्कूली गणित कार्यक्रम, डी.ई.ई., एन.सी.ई.आर.टी., नयी दिल्ली
धर्मप्रकाश, *प्रोफ़ेसर* (भूतपूर्व), प्रारंभिक शिक्षा विभाग, एन.सी.ई.आर.टी., नयी दिल्ली
नम्रता निगम, *जे.पी.एफ़,* प्रारंभिक स्कूली गणित कार्यक्रम, डी.ई.ई., एन.सी.ई.आर.टी., नयी दिल्ली
राबिया मलिक, *टीचर फ़ैलो* एवं *परामर्शदाता*, प्रारंभिक स्कूली गणित कार्यक्रम, डी.ई.ई., एन.सी.ई.आर.टी., नयी दिल्ली

सदस्य समन्वयक

उषा शर्मा, *प्रोफ़ेसर,* प्रारंभिक शिक्षा विभाग, एन.सी.ई.आर.टी., नयी दिल्ली

मिल-जुल कर स्कूल में जाएँ, साथ पढ़ें और
साथ में खाएँ। रंग-बिरंगी प्यारी दुनिया,
साथ मिलकर इसे सजाएँ।

Prelims..indd 6 08-Dec-2020 12:17:07 PM

आभार

परिषद्, विपिन जैन, *संयुक्त सचिव*, प्रौढ़ शिक्षा, शिक्षा मंत्रालय के प्रति विशेष रूप से आभार व्यक्त करती है जिन्होंने इस सामग्री के विकास में अपना सहयोग प्रदान किया।

परिषद्, उन सभी रचनाकारों के प्रति आभार व्यक्त करती है, जिनकी रचनाएँ पुस्तक में शामिल की गई हैं। रचनाओं के प्रकाशन के लिए अनुमति देने के लिए *सचिव*, भारत ज्ञान विज्ञान समिति, नयी दिल्ली *(दानी पेड़, सौ साल का सिनेमा)*; रमेश थानवी, *अध्यक्ष*, राजस्थान प्रौढ़ शिक्षण समिति, जयपुर, राजस्थान *(घड़ियों की हड़ताल)*; सुशील शुक्ल, *निदेशक*, एकतारा, भोपाल *(दीवाली के दीये)*, सुभाष व्याम और दुर्गा बाई, *लोक चित्रकार*, भोपाल (ददरिया लोकगीत); केंद्रीय भारतीय भाषा संस्थान, मैसूर, कर्नाटक और केंद्रीय हिन्दी संस्थान, आगरा, उत्तर प्रदेश *(कैसे आएगी नानी)* का परिषद् आभार व्यक्त करती है।

पुस्तक के विकास में सहयोग के लिए परिषद् मंजुला माथुर, प्रोफ़ेसर, (सेवानिवृत्त) एन.सी.ई.आर.टी., माधवी कुमार, *रीडर* (सेवानिवृत्त) एन.सी.ई.आर.टी.; मालविका राय, *शिक्षाविद्*; शारदा कुमारी, *प्राचार्य*, डाइट, आर.के.पुरम; संजीव कुमार, *पूर्व प्राचार्य*, डाइट, नयी दिल्ली; शहजाद हुसैन, *पूर्व निदेशक*, राज्य संसाधन केंद्र, जामिया मिल्लिया इस्लामिया, नयी दिल्ली; मोहम्मद अलीम, *लेखक*, नयी दिल्ली; अपर्णा टिक्कू, *प्रोग्राम एसोसिएट*, राज्य संसाधन केंद्र, जामिया मिल्लिया इस्लामिया, नयी दिल्ली, सही राम, *लेखक*, नयी दिल्ली; रेनु चौहान, (सेवानिवृत्त) *एक्सटेंशन ऑफ़िसर*, नयी दिल्ली; रवीन्द्र पाल, (सेवानिवृत्त) *वरिष्ठ व्याख्याता*, डाइट, नयी दिल्ली; अक्षय कुमार दीक्षित, *शिक्षक*, सर्वोदय विद्यालय, नयी दिल्ली; सत्यवीर सिंह, *प्राचार्य*, एस.एन.आई. कॉलेज, बागपत, उत्तर प्रदेश; अनिल कुमार, *प्राचार्य*, डाइट, दिलशाद गार्डन, दिल्ली; संदीप दिवाकर, *संसाधन व्यक्ति*, अज़ीम प्रेमजी फ़ाउंडेशन; पंकज तिवारी, *शिक्षक*, सरकारी विद्यालय (उर्दू), सियोनी, मध्य प्रदेश के प्रति आभार व्यक्त करती है।

इसके साथ ही पुस्तक में चित्रांकन के लिए परिषद् शशि शेट्ये, नयी दिल्ली; सुनीता, *लोक चित्रकार* (मांडना शैली), सवाईमाधोपुर, राजस्थान; सुभाष व्याम, *लोक चित्रकार* (गोंड भित्ति शैली), भोपाल, मध्य प्रदेश; दुर्गाबाई, *लोक चित्रकार* (गोंड भित्ति शैली), भोपाल, मध्य प्रदेश; मानसिंह, *लोक चित्रकार* (गोंड भित्ति शैली), भोपाल, मध्य प्रदेश; प्रशांत सोनी, उदयपुर, राजस्थान; सागर अरणकल्ले, नोएडा, उत्तर प्रदेश; शुभम, चंदेरी, मध्य प्रदेश; हबीब अली, ग्वालियर, मध्य प्रदेश; जितेंद्र चौरसिया, देवास मध्य प्रदेश, हरिओम पाटीदार, धार, मध्य प्रदेश, नीलेश गहलोत, धार, मध्य प्रदेश, तपोशी घोषाल, नयी दिल्ली; रुचिन सोनी, नयी दिल्ली का विशेष आभार व्यक्त करती है।

परिषद्, नसीम अहमद, *मुख्य परामर्शदाता* (भूतपूर्व), राष्ट्रीय साक्षरता अभियान, शिक्षा मंत्रालय और आपगा, रोटरी इंडिया लिटेरसी मिशन, दिल्ली को उनके सहयोग के लिए आभार व्यक्त करती है।

परिषद्, भारत निर्वाचन आयोग, राष्ट्रीय मतदाता सेवा पोर्टल, राष्ट्रीय आपदा प्रबंधन प्राधिकरण, राष्ट्रीय साक्षरता मिशन प्राधिकरण, राज्य संसाधन केंद्र, इंदौर के प्रति भी आभार प्रकट करती है जिनकी वेबसाइट से प्रवेशिका के निर्माण के लिए उपयोगी सामग्री और चित्र प्राप्त हुए।

पुस्तक के विकास के विभिन्न चरणों में सहयोग के लिए संजू शर्मा, मोहम्मद आतिर, हरि दर्शन लोधी, अजय कुमार प्रजापति, गंर्धव, गिरीश गोयल, नितिन तंवर और आमिर अली, *डी.टी.पी. ऑपरेटर* (संविदा) के आभारी हैं। परिषद्, प्रकाशन प्रभाग के संपादन स्कंध के सदस्यों, मीनाक्षी, *सहायक संपादक* (संविदा); कहकशा, *सहायक संपादक* (संविदा); दिनेश वशिष्ट, *सहायक संपादक* (संविदा); अंजु शर्मा, *संपादकीय सहायक* (संविदा) की आभारी है जिन्होंने प्रवेशिकाओं को अंतिम रूप देने में विशेष योगदान दिया है। परिषद्, प्रारंभिक शिक्षा विभाग, एन.सी.ई.आर.टी. की सपना, प्रेरणा और पाठ्यचर्या अध्ययन समूह के तेजकिशन और पवन के प्रति आभारी है जिनके सहयोग से इस कार्य को पूरा करने में मदद मिली।

प्रकाशन प्रभाग से मिले पूर्ण सहयोग एवं सुविधाएँ का परिषद् आभार व्यक्त करती है।

विषय-सूची

आमुख *iii*

11. मनोरंजन **2–19**

हिंदी भाषा

- मुफ़्त ही मुफ़्त
- 'ददरिया' लोकगीत
- जादुई लालटेन

गणित

- आकृतियों की समझ बनाना (वर्ग, आयत, त्रिभुज, गोला इत्यादि)
- आकृतियों और संख्याओं के पैटर्न की समझ बनाना

12. वित्तीय साक्षरता **20–36**

हिंदी भाषा

- शबेनूर की उलझन
- दान का हिसाब

गणित

- बैंक खाता खुलवाने संबंधित जानकारी का उपयोग करना
- बैंक संबंधित फ़ार्म पढ़ना, समझना और भरना (चैक, जमा पर्ची, नकद निकासी पर्ची)

13. डिजिटल साक्षरता **37–54**

हिंदी भाषा

- डिजिटल दुनिया
- मोबाइल की दुनिया

गणित

- डिजिटल अंकों की पहचान एवं लिखना
- चित्र में प्रदर्शित आँकड़ों की समझ
- मोबाइल फ़ोन से संबंधित दैनिक जीवन की समस्या हल करना

पढ़ेंगे
लिखेंगे
खेलेंगे
संग-संग

मेरी किताब

मेरा नाम – ____________________

मेरा पता – ____________________

____

मेरा फ़ोन नंबर – ____________________

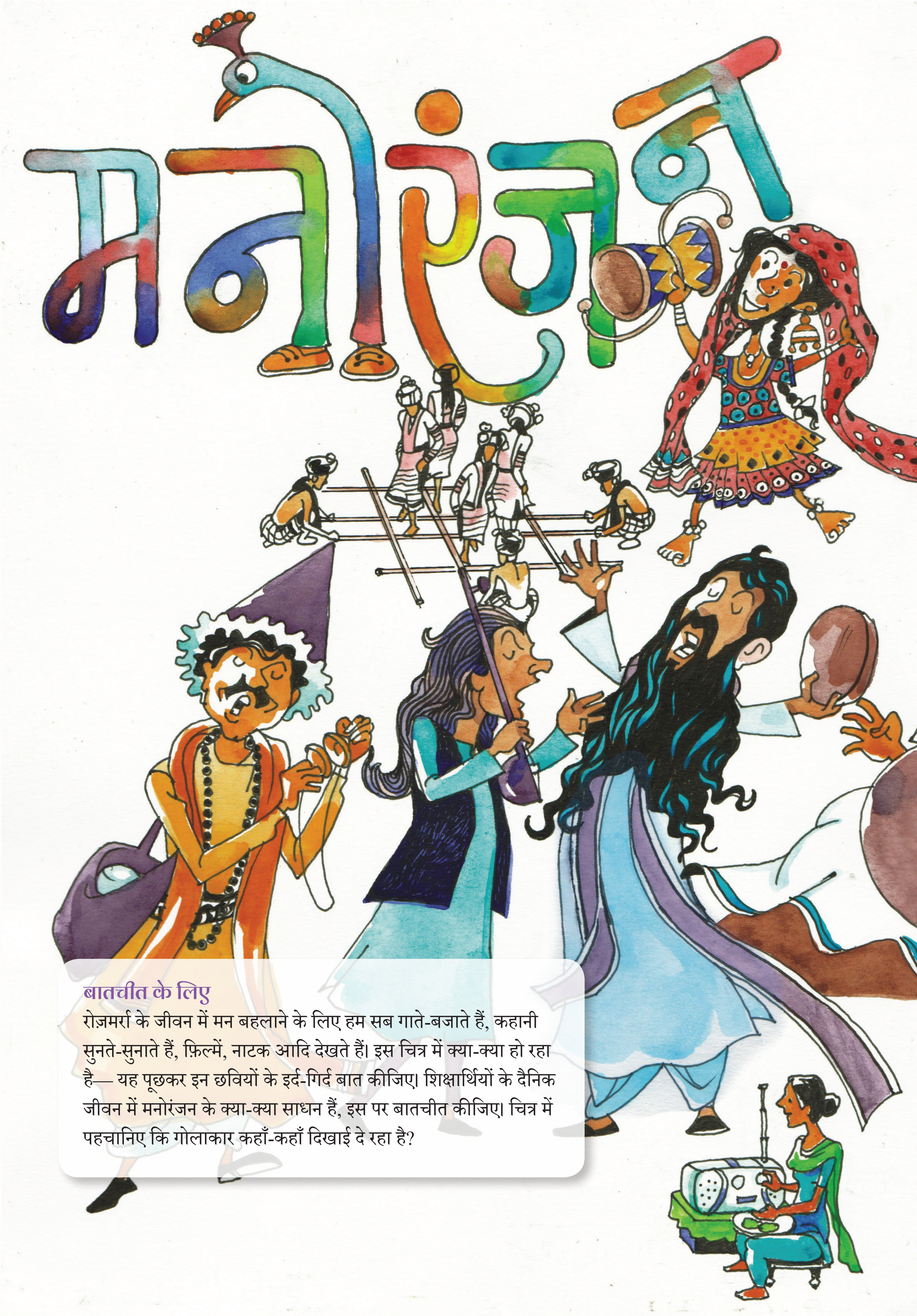

बातचीत के लिए

रोज़मर्रा के जीवन में मन बहलाने के लिए हम सब गाते-बजाते हैं, कहानी सुनते-सुनाते हैं, फ़िल्में, नाटक आदि देखते हैं। इस चित्र में क्या-क्या हो रहा है— यह पूछकर इन छवियों के इर्द-गिर्द बात कीजिए। शिक्षार्थियों के दैनिक जीवन में मनोरंजन के क्या-क्या साधन हैं, इस पर बातचीत कीजिए। चित्र में पहचानिए कि गोलाकार कहाँ-कहाँ दिखाई दे रहा है?

Chapter_ 11ndd Folder.indd 2 08-Dec-2020 10:12:01 AM

For Conversation

All of us watch films, sing and dance, tell stories or go to the theatre for entertainment. What are the different activities taking place in the picture– ask the learners to repond on the difference images given in the picture above. Discuss about the various means of entertainment in the learner's daily life. Identify shapes of 'Circle' in the picture.

Chapter_ 11ndd Folder.indd 3 08-Dec-2020 10:12:04 AM

मनोरंजन

आप सीखेंगे

- आकृतियों की समझ बनाना (वर्ग, आयत, त्रिभुज, गोला इत्यादि)
- आकृतियों और संख्याओं के पैटर्न की समझ बनाना

मुफ़्त ही मुफ़्त

एक दिन भीखूभाई का मन नारियल खाने का हुआ। लेकिन घर में तो एक भी नारियल नहीं था।

"ओहो! अब मुझे बाज़ार जाना पड़ेगा," उन्होंने अपनी पत्नी लाभुबेन से कहा।

लाभुबेन अपने कंधे उचकाकर बोलीं, "खाना है तो जाना है।"

भीखूभाई ने कहा, "पैसे खर्च करने पड़ेंगे।"

लाभुबेन बोली, "हाँ। पैसे तो खर्च करने पड़ेंगे।

भीखूभाई ज़रा कंजूस थे। मगर नारियल खाने के लिए जी ऐसा ललचाया कि वे लाभुबेन से बोले, "अच्छा, मैं बाज़ार तक हो आता हूँ। पता तो चले कि नारियल आजकल कितने में बिक रहे हैं।"

जूते पहनकर, छड़ी उठाकर, भीखूभाई निकल पड़े। बाज़ार में लोग अपने-अपने कामों में लगे थे। भीखूभाई देखते-पूछते, नारियलवाले के पास पहुँच गए।

"ऐ नारियलवाले, नारियल कितने में दोगे?" भीखूभाई ने पूछा।

नारियलवाले ने कहा, "बस, दो रुपए में काका",

"बस, दो रुपए!" भीखूभाई ने आँखें फैलाकर कहा, "बहुत ज़्यादा है। एक रुपए में दे दो।"

नारियलवाले ने कहा, "ना जी ना। दो रुपए, सही दाम। ले लो या छोड़ दो,"

Chapter_ 11ndd Folder.indd 4 08-Dec-2020 10:12:05 AM

“ठीक है! ठीक है!” भीखूभाई बड़बड़ाए। “अच्छा तो बताओ, एक रुपए में कहाँ मिलेगा?”

नारियलवाले ने कहा, “यहाँ से थोड़ी दूर जो मंडी है, वहाँ शायद मिल जाए।”

सो भीखूभाई उसी तरफ चल पड़े।

मंडी में कोलाहल फैला हुआ था। व्यापारियों की ऊँची-ऊँची आवाज़ें गूँज रही थीं।

माथे का पसीना पोंछकर भीखूभाई ने इधर-उधर ताका। नारियलवाले को देखकर पूछा, “अरे भाई, एक नारियल कितने में दोगे?”

“सिर्फ़ एक रुपया, काका,” नारियलवाले ने जवाब दिया।

भीखूभाई ने कहा, “यह क्या? मैं इतनी दूर से आया हूँ और तुम पूरा एक रुपया माँग रहे हो!

Chapter_ 11nda Folder.indd 5 08-Dec-2020 10:12:06 AM

पचास पैसे काफ़ी हैं। मैं इस नारियल को लेता हूँ और तुम यह लो पकड़ो पचास पैसे।" नारियलवाले ने झट भीखूभाई के हाथ से नारियल को छीन लिया और बोला, "माफ़ करो, काका। एक रुपया या फिर कुछ नहीं।" लेकिन भीखूभाई का निराश चेहरा देखकर बोला, "बंदरगाह पर चले जाओ, हो सकता है वहाँ तुम्हें पचास पैसे में मिल जाए।"

पैरों को घसीटते हुए, भीखूभाई चलने लगे। सागर के किनारे एक नाववाला बैठा था।

"अरे भाई, एक नारियल कितने में दोगे?" भीखूभाई ने पूछा।

"काका, केवल पचास पैसे" नाववाले ने कहा। "पचास पैसे!" भीखूभाई मानो हैरानी से हक्के-बक्के हो गए। "इतनी दूर से पदैल आया हूँ और तुम कहते हो पचास पैसे? ना भाई ना!

पचास पैसे बहुत ज़्यादा हैं। मैं तुम्हें पच्चीस पैसे दूँगा। यह लो, रख लो।" ऐसा कहते हुए, भीखूभाई झुककर नारियल उठाने ही वाले थे – नाववाले ने कहा, "नीचे रख दो। मेरे साथ कोई सौदा-वौदा नहीं चलेगा।"

थोड़ी देर बाद उसने भीखूभाई की ओर ध्यान से देखा और बोला, "सस्ते में चाहिए? नारियल के बगीचे में चले जाओ। वहाँ ढेर सारे मिल जाएँगे, मनपसंद दाम में।"

भीखूभाई नारियल के बगीचे में पहुँच गए। वहाँ के माली को देखकर उससे पूछा, "यह नारियल कितने में बेचोगे?"

माली ने जवाब दिया, "बस, पच्चीस पैसे का एक!"

Chapter_ 11ndd Folder.indd 6 08-Dec-2020 10:12:07 AM

"हे भगवान! पच्चीस पैसे! पूरा रास्ता पैदल आने के बाद भी! जूते घिस गए, पैर थक गए और अब पैसे भी देने पड़ेंगे? मेरी बात मानो, एक नारियल मुफ़्त में ही दे दो, हाँ!"

भीखूभाई की बात सुनकर माली ने कहा, "अरे, काका। मुफ़्त में चाहिए न? यह रहा पेड़ और वह रहा नारियल। पेड़ पर चढ़ जाओ और जितने चाहो तोड़ लो।"

"सच? जितना चाहूँ ले लूँ?" भीखूभाई तो खुशी से फूले न समाए।

उन्होंने जल्दी-जल्दी पेड़ पर चढ़ना शुरू कर दिया।

भीखूभाई ऊपर पहुँच गए और दोनों हाथों को आगे बढ़ाने लगे सबसे बड़े नारियल को तोड़ने के लिए। ज़्ज़्ज्क! पैर फिसल गए। भीखूभाई ने एकदम से नारियल को पकड़ लिया। उनके दोनों पैर हवा में झूलते रह गए।

Chapter_ 11ndd Folder.indd 7 08-Dec-2020 10:12:08 AM

"ओ माँ! अब मैं क्या करूँ?" भीखूभाई चिल्लाने लगे, "अरे भाई! मदद करो" उन्होंने नीचे खड़े माली से विनती की। माली ने कहा, "वो मेरा काम नहीं, काका, मैंने सिर्फ़ नारियल लेने की बात की थी। बाकी सब तुम्हारे और तुम्हारे नारियल के बीच का मामला है। पैसे नहीं, खरीदना नहीं, बेचना नहीं, और मदद नहीं। सब कुछ मुफ़्त।"

तभी ऊँट पर सवार एक आदमी वहाँ से गुज़रा। भीखूभाई ज़ोर-ज़ोर से बुलाने लगे, "ओ ऊँटवाले! मेरे पैर वापस पेड़ पर टिका दो न! बड़ी मेहरबानी होगी।"

ऊँटवाले ने सोचा, "चलो मदद कर देता हूँ।"

ऊँट की पीठ पर खड़े होकर उसने भीखूभाई के पैरों को पकड़ लिया। ठीक उसी समय ऊँट को हरे-हरे पत्ते नज़र आए। पत्ते खाने के लालच में ऊँट ने गर्दन झुकाई और अपनी जगह से हट गया। बस, वह आदमी ऊँट की पीठ से फिसल गया! अपनी जान बचाने के लिए उसने भीखूभाई के पैरों को कसकर पकड़ लिया। अब दोनों क्या करते? इतने में एक घुड़सवार आया। घुड़सवार को देखकर भीखूभाई ने दुहाई दी, "ओ मेरे भाई, मुझे पेड़ पर वापस पहुँचा दो।"

"हम्म्म। मैं घोड़े की पीठ पर चढ़कर इनकी मदद कर देता हूँ" यह सोचकर घुड़सवार घोड़े पर उठ खड़ा हुआ।

Chapter_ 11ndd Folder.indd 8 08-Dec-2020 10:12:09 AM

लेकिन कौन कहता है कि घोड़ा ऊँट से बेहतर है? हरी-हरी घास दिखाई देने पर तो दोनों एक जैसे ही हैं। घास के चक्कर में घोड़ा ज़रा आगे बढ़ा और छोड़ चला अपने मालिक को ऊँटवाले के पैरों से लटकते हुए।

एक, दो और अब तीनों के तीनों—झूलते रहे नारियल के पेड़ से।

"काका! काका! कसके पकड़े रहना, हाँ!", घुड़सवार ने पसीना-पसीना होते हुए कहा, "जब तक कोई बचाने वाला न आए, कहीं छोड़ न देना। मैं आपको सौ रुपए दूँगा।"

""काका! काका!" अब ऊँटवाले की बारी थी। "मैं आपको दो सौ रुपए दूँगा, लेकिन नारियल को छोड़ना नहीं।"

"सौ और दो सौ! बाप रे बाप, तीन सौ रुपए!" भीखूभाई का सिर चकरा गया। "इतना! इतना सारा पैसा!" खुशी से उन्होंने अपनी दोनों बाहों को फैलाया... और नारियल गया हाथ से छूट।

धड़ाम से तीनों ज़मीन पर गिरे—घुड़सवार, ऊँटवाला और भीखूभाई। भीखूभाई अपने आप को सँभाल ही रहे थे कि एक बहुत बड़ा नारियल उनके सिर पर आ फूटा। बिल्कुल मुफ़्त!

—ममता पण्ड्या

अनुवाद – *संध्या राव*

(*स्रोत— रिमझिम*, कक्षा-4, एन.सी.ई.आर.टी.)

बातचीत के लिए

प्रश्न 1. कहानी में भीखूभाई को कंजूस कहा गया है। क्या वे सचमुच कंजूस थे? कैसे?

प्रश्न 2. क्या भीखूभाई जैसे व्यक्ति कभी आपको अपनी ज़िंदगी में मिले हैं? उनके बारे में बताइए।

प्रश्न 3. जब आप बाज़ार से कोई सामान खरीदते हैं तो किन-किन बातों का ध्यान रखते हैं और क्यों?

प्रश्न 4. आपके हिसाब से इन चीज़ों को खरीदते समय किन बातों का ध्यान रखा जाना चाहिए?

(क) दवाई (ख) दाल (ग) गेहूँ (घ) हरी सब्ज़ी

प्रश्न 5. क्या कुछ चीज़ें ऐसी भी हैं जो आपके हिसाब से महँगी हैं, लेकिन आपको उसके लिए पैसा खर्च करना ही पड़ता है? क्यों?

पढ़िए और बताइए

कहानी के आधार पर सही बात पर (✓) का निशान लगाइए।

1. भीखूभाई नारियल खाना चाहते थे।	हाँ	नहीं
2. भीखूभाई बहुत कंजूस थे।	हाँ	नहीं
3. मंडी में नारियल का दाम तीन रुपए था।	हाँ	नहीं
4. माली ने भीखूभाई की मदद की।	हाँ	नहीं
5. पेड़ पर नारियल से तीन लोग लटके हुए थे।	हाँ	नहीं

पढ़िए, बताइए और लिखिए

प्रश्न 1. हर बार भीखूभाई नारियल के कम दाम देना चाहते थे। क्या ऐसा करना सही था? क्यों?

Chapter_ 11ndd Folder.indd 10 08-Dec-2020 10:12:10 AM

प्रश्न 2. नारियल के बगीचे से लेकर बाज़ार तक आते-आते नारियल के दाम बढ़ जाते हैं। ऐसा क्यों होता है?

प्रश्न 3. कोई सामान बेचते या खरीदते समय आपको कौन-कौन सी परेशानियाँ आती हैं?

प्रश्न 4. मंडी में कोलाहल फैला हुआ था। व्यापारियों की ऊँची-ऊँची आवाज़ें गूँज रही थीं।

(क) मंडी में किस-किस तरह की आवाज़ें आ रही होंगी?

(क) मंडी में लोग ऊँची-ऊँची आवाज़ें क्यों लगाते होंगे?

प्रश्न 5. आपके बाज़ार में ऐसी कौन-सी चीज़ें हैं जो आप खरीद पाते हैं? ऐसी कौन-सी चीज़ें हैं जो आप नहीं खरीद पाते? कारण बताइए।

खरीदी जा सकने वाली चीज़ें	न खरीदी जा सकने वाली चीज़ें	कारण

Chapter_ 11ndd Folder.indd 11 08-Dec-2020 10:12:10 AM

प्रश्न 6. भीखूभाई अंत में नारियल को मुफ़्त में खरीदना चाहते थे। क्या आप कोई चीज़ मुफ़्त में खरीदना पसंद करेंगे? क्यों?

____

____

____

प्रश्न 7. इस कहानी का कौन-सा हिस्सा आपको बहुत पसंद आया और क्यों?

____

____

____

प्रश्न 8. 'भीखूभाई तो खुशी से फूले न समाए।' आपकी ज़िंदगी में खुशी के पल कौन-से होते हैं?

____

____

____

प्रश्न 9. सही शब्द से वाक्य पूरे कीजिए।

(क) तभी ऊँट पर ____________ एक आदमी वहाँ से गुज़रा।

(ख) भीखूभाई के दोनों ____________ हवा में झूलते रह गए।

(ग) उसी समय ऊँट को हरे ____________ पत्ते नज़र आए।

(घ) तीनों ____________ से ज़मीन पर गिर पड़े।

Chapter_ 11ndd Folder.indd 12 08-Dec-2020 10:12:10 AM

■ तरानी के बनाए हुए चित्र

तरानी के बनाए चित्र सिनेमाघर की दीवारों पर भी लगे हैं। वह तिकोन (▲), चौकोर (■ या ▬) और गोल (●) की मदद से तरह-तरह के चित्र बनाती है।

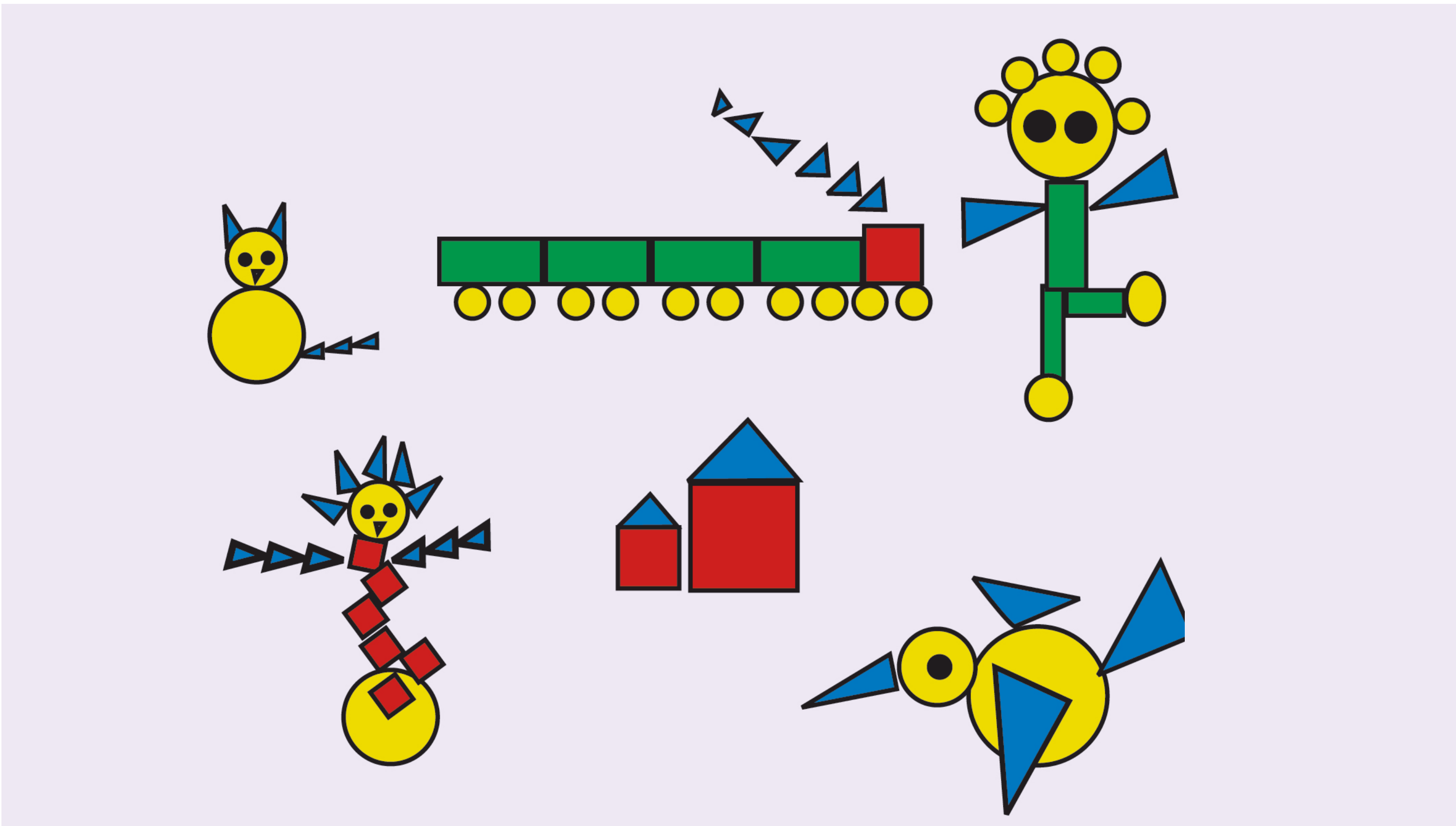

सीमा गिनकर पता लगाना चाहती है कि तरानी ने कुल कितने गोल, तिकोन, चौकोर से यह चित्र बनाया है। क्या आप सीमा की मदद करेंगे?

कुल तिकोन (▲) ☐

कुल चौकोर (■ या ▬) ☐

कुल गोल (●) ☐

शिक्षक-निर्देश— शिक्षार्थियों को अपने आस-पास व दैनिक जीवन में पाई जाने वाली आकृतियों को पहचानने में मदद करें।

For the Facilitator: Help the learners to recognise the shapes which are observed in their daily life.

Chapter_ 11ndd Folder.indd 13 08-Dec-2020 10:12:13 AM

- **आप भी तिकोने (), चौकोर (या) और गोल () की सहायता से कुछ चित्र बनाइए।**

- **अपने आस-पास की वस्तुओं को देखिए और लिखिए**

गोल		साइकिल का पहिया			
तिकोन		समोसा			
चौकोर		रुमाल			
चौकोर		दरवाज़ा			

Chapter_ 11ndd Folder.indd 14 08-Dec-2020 10:12:14 AM

डिज़ाइन और पैटर्न

अनोखी ने मेले में तरह-तरह के डिज़ाइनों की झंडियों से बनी लड़ियाँ देखीं। अनोखी अपने लिए कुछ झंडियाँ बना रही है। क्या आप झंडियाँ बनाने में अनोखी की सहायता कर सकते हैं?

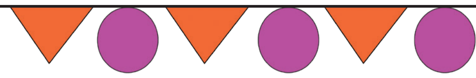

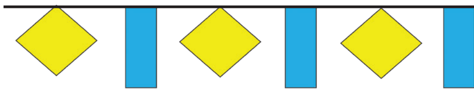

अनोखी ने मेले में से कुछ दरियाँ खरीदीं। इन दरियों के किनारों पर आपको कौन-कौन सी आकृतियाँ दिख रही हैं? उनके चित्र बनाइए।

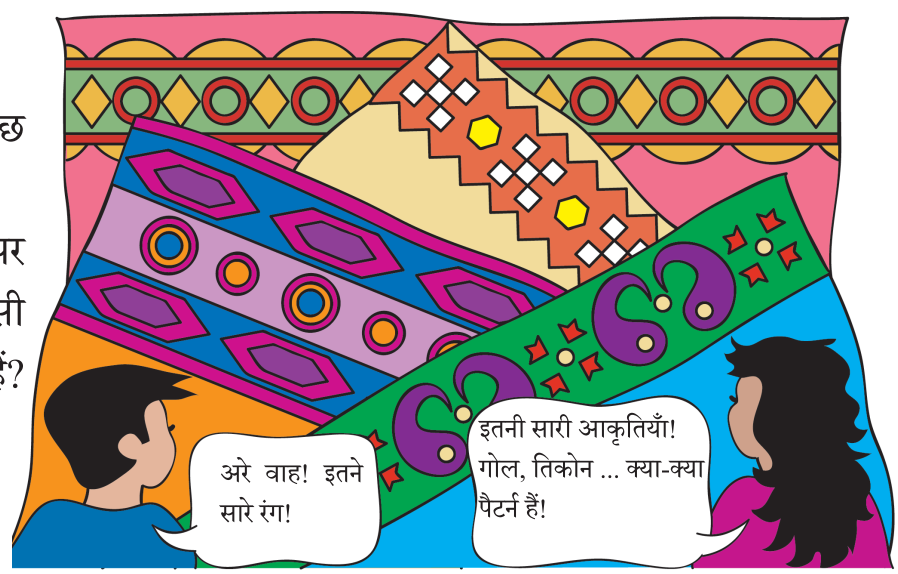

सीधी रेखा से बनने वाली आकृतियाँ

घुमावदार रेखा से बनने वाली आकृतियाँ

Chapter_ 11ndd Folder.indd 15 08-Dec-2020 10:12:18 AM

किसी डिज़ाइन में कुछ आकृतियाँ बार-बार क्यों आती हैं? अनोखी ने झंडियाँ बनाने के बाद अपने बैठने के लिए एक आसन बनाना शुरू किया। क्या आप अनोखी के आसन को पूरा कर सकते हो?

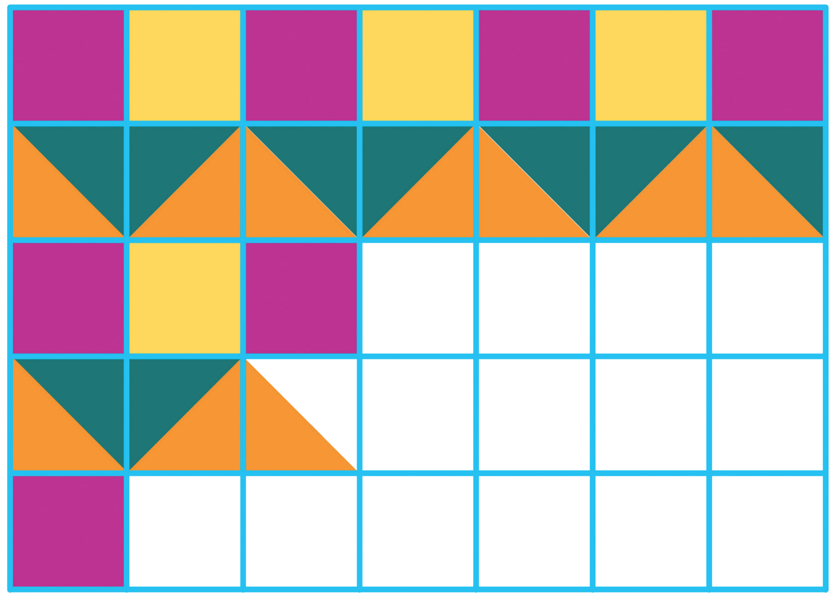

■ कितने कोने?

▲	▲▲	▲▲▲	▲▲▲▲
3	6	9	

■ क्या आप बता सकते हैं कि खाली स्थान में कौन-सी संख्या आएगी?

2	4	6	8			
3	6	9	12			
3	7	11	15			
10	20	30	40			

शिक्षक-निर्देश— शिक्षार्थियों से चर्चा करें कि आकृतियाँ सीधी रेखा या घुमावदार रेखा या दोनों तरह की रेखाओं से मिलकर बनती हैं। पैटर्न में कुछ आकृतियों का बार-बार दोहराव होता है।

For the Facilitator: Discuss with learners that different shapes can be formed by straight lines or curved lines or both lines. Also discuss about repetition of shapes in forming patterns.

Chapter_ 11ndd Folder.indd 16 08-Dec-2020 10:12:21 AM

मिलकर पढ़िए

'ददरिया' गीत

यह एक आदिवासी लोकगीत है। यह गीत गोंड समुदाय द्वारा सावन-भादों के मौसम में खेतों में काम करते हुए गाया जाता है। इसकी भाषा में छत्तीसगढ़ी और हिंदी का मिश्रण है। यह 'ददरिया' गीत हल चलाने वाले हलवाहे और निदाई करने वाली महिला के बीच संवाद रूप में गाया जाता है। गूलर के पेड़ वाले खेत में नगरिया हल चलाने वाले और निदैइया– निदाई करने वाली के बीच संवाद चल रहा है। वे दोनों संध्या समय में साथ जाने की बात कर रहे हैं। नगरिया कहता है, "निदैइया तुम्हारे गाने की आवाज़ नहीं आ रही, साथ में गाना गाओ। हम संध्या समय घर साथ जाएँगे।" निदैइया कहती है, "आम तोड़कर खाने के लिए बुलाया था पर आपने धोखा दिया।" नगरिया कहता है, "साथ में मिलकर गीत गाओ संध्या समय घर साथ जाएँगे।"

'ददरिया' लोक-गीत

नगरिया – उमरिया, डुमरिया डुमर वाले खेत
तैं तो निदैइया, मैं तो नगरिया
संझा के बेरा, संघे जाबीरे दोस्त ऽ ऽ ऽ

निदैइया – गावइया गादी वइसै गाले
उमरिया, डुमरिया डुमर वाले खेत
तैं तो निदैइया, मैं तो नगरिया
संझा के बेरा, संघे जाबौ रे दोस्त ऽ ऽ ऽ

नगरिया – नई आवै बइया तुम्हारो
आरो बइसे गाले
उमरिया, डुमरिया डुमर वाले खेत
तैं तो निदैइया, मैं तो नगरिया
संझा के बेरा, संघे जाबौ रे दोस्त ऽ ऽ ऽ

Chapter_ 11ndd Folder.indd 17 08-Dec-2020 10:12:26 AM

निदैइया – आमाला टोरौं खाहुँच कहि के
मोला दागा माँ भुलवाए, अहुँच कहिके वैसे गाले
एइसे गाले
उमरिया, डुमरिया डुमर वाले खेत
तैं तो निदैइया, मैं तो नगरिया
संझा के बेरा, संघे जाबौ रे दोस्त ऽ ऽ ऽ

नए शब्दों के अर्थ जानिए

1. नगरिया – हलवाला (पुरुष), 2. निदैइया – निदाई करने वाली महिला, 3. डूमर – गूलर का पेड़, 4. मोला – मुझे, 5. आमाला – आम, 6. खाहुँच – खाने के लिए, 7. दागा – धोखा, 8. भुलवाए – बुलवाया, 9. आरो – आवाज़

खेत के मेड़ में डूमर के पेड़ लगे हैं, इसलिए उस खेत का नाम डूमर वाले खेत पड़ा

मेरे शब्द

शिक्षक-निर्देश— 'मनोरंजन' विषय को समेटते हुए बातचीत कीजिए। शिक्षार्थियों से पूछकर इस विषय से जुड़े तीन-चार शब्द लिखिए। ये शब्द उनकी अपनी भाषा के भी हो सकते हैं, जैसे– 'शाम' के लिए 'संझा' आदि।

For the Facilitator: Conclude the theme *Manoranjan* through discussion. Write three-four words related to this theme by asking the learners. These words can be from their own language also. For example– *Sanjha* for *Shaam* etc.

Chapter_ 11ndd Folder.indd 18 08-Dec-2020 10:12:29 AM

■ बातचीत के लिए

1. यह लोकगीत कब और क्यों गाते हैं?
2. क्या आपको कोई लोकगीत याद है? यदि हाँ, तो सुनाइए।

■ मिलकर पढ़िए और बातचीत कीजिए

जादुई लालटेन

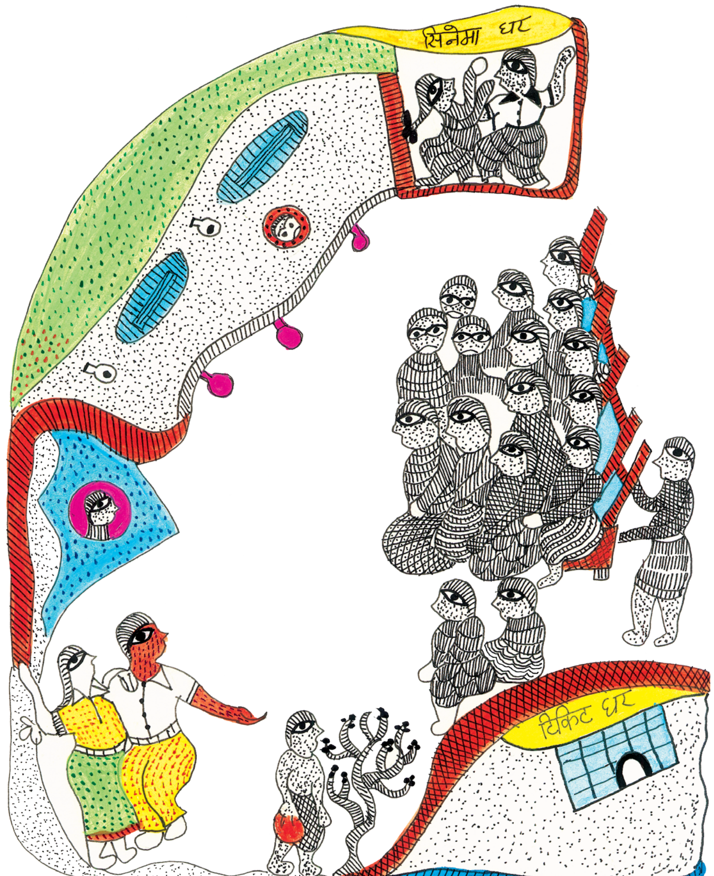

सिनेमा संसार भर में फैला हुआ है। सिनेमा का अपना संसार है। तीन घंटे के शो में हज़ारों लोग एक साथ रहते हैं। दीन-मजहब, जात-पात, अमीरी-ग़रीबी, सब भेद-भाव भूलकर साथ-साथ हँसते-रोते, खुश होते, मज़ा लेते, सोचते-समझते हैं। भारत जैसे बड़े देश में सिनेमा की उतनी ही बड़ी भूमिका है। वह देश और समाज को जोड़ने का काम करता है। हिंदी में बनी फिल्में केवल हिंदी इलाके में ही सराही नहीं जातीं। दक्षिण भारत में भी उन्हें बड़े चाव से देखा जाता है। हिंदी सिनेमा में दक्षिण की गैर हिंदी फिल्मों की धुनें और गीत-संगीत मशहूर हो रहे हैं।

सिनेमा को चलचित्र भी कहते हैं। सिनेमा को जादुई लालटेन भी कहा गया है। अगले सौ साल में इसकी लौ और ऊँची और मोहक, और साफ़ हो— हम यह कामना करते हैं।

— प्रेम रंजन अनिमेष

(स्रोत— सौ साल का सिनेमा)

Chapter_ 11ndd Folder.indd 19 08-Dec-2020 10:12:33 AM

12 वित्तीय साक्षरता

आप सीखेंगे

- बैंक खाता खुलवाने संबंधित जानकारी का उपयोग करना
- बैंक संबंधित फ़ार्म पढ़ना, समझना और भरना (चैक, जमा पर्ची, नकद निकासी पर्ची)

शबेनूर की उलझन

"क्या हुआ शबेनूर? ऐसे क्यों बैठी हो?", पड़ोसी रवि ने पूछा। शबेनूर अपने घर की चौखट पर बैठी थी। वह बहुत परेशान थी। कोई जवाब न मिलने पर रवि ने फिर पूछा, "अब बताओगी भी कि क्या हुआ।" शबेनूर की तंद्रा भंग हुई। उसकी समझ में नहीं आ रहा था कि वह क्या जवाब दे। उसने सुबकते हुए कहा, " मेरी सारी जमा-पूँजी चली गई। कुछ भी तो नहीं बचा।"

"अब पहेलियाँ ही बुझाती रहोगी कि कुछ साफ़-साफ़ बताओगी भी?", रवि भी परेशान हो गया था।

"मेरी सारी गाढ़ी कमाई चली गई।", शबेनूर ने गेहूँ के कनस्तर के तरफ देखते हुए कहा।

"कहाँ चली गई?", रवि ने फिर पूछा।

फिर जो शबेनूर ने सारा किस्सा बताया तो रवि के पैरों तले ज़मीन खिसक गई। रवि जानता है कि पैसे कितनी मुश्किल से कमाए जाते हैं। अगर वह

बातचीत के लिए— 1. अधिकतर लोग अपने पैसे सँभालकर कहाँ रखते हैं? 2. बैंक और डाकघर में पैसे रखने के क्या लाभ हैं? 3. क्या आपने बैंक या डाकघर में खाता खुलवाया है? 4. आप बैंक या डाकघर कितनी बार और किन-किन कामों के लिए जाते हैं? 5. बैंक में आपको किस-किस तरह कि परेशानियाँ आती हैं?

For Conversation: 1. Where do most kept keep their money? 2. What are the advantages of keeping money in the bank and post office? 3. Have you opened an account in the bank or post office? 4. How many times do you visit the bank or post office and for what reasons? 5. What are the sort of problems you face in the bank?

कमाई कोई ले जाए तो कितनी परेशानी होती है। शबेनूर ने भी सिलाई कर-करके बहुत मेहनत से पाई-पाई जोड़ी थी। पूरे 20 हज़ार रुपए थे! बस उससे एक गलती हो गई। वह अपनी बचत के सारे पैसे सँभालकर एक गेहूँ के कनस्तर में रखती चली गई। उसे चोरी का जो डर था। सो वही हुआ। कल रात चोर उसका पैसा ले उड़े।

अब शबेनूर की उलझन थी कि बिटिया के स्कूल की फ़ीस कैसे दे। मकान का किराया कैसे भरे? राशन कहाँ से आएगा? रोज़मर्रा की ज़रूरतों को कैसे पूरा करेगी?

रवि ने शबेनूर को हौंसला देते हुए कहा, "देखो बहन, अब जो हुआ सो हुआ। हम सब हैं तुम्हारी मदद के लिए। लेकिन आज से एक बात गाँठ बाँध लो। पैसा घर में नहीं बल्कि बैंक में रखोगी या डाकघर में। हमारा पैसा बचा भी रहेगा और ब्याज मिलेगा सो अलग।"

"आम के आम, गुठलियों के दाम", पीछे से रुहीना की आवाज़ आई। वह अपनी अम्मी के गले लग गई। शबेनूर ने उदासी भरी हामी भरी।

शबेनूर को उलझन हो रही थी कि खाता कैसे खुलेगा। उसमें तो बहुत कागज़ चाहिए! न जाने क्या-क्या कागज़ भरने पड़ते हैं!

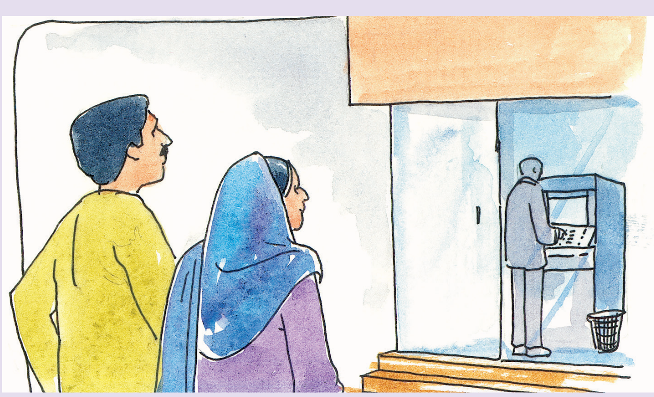

अगले दिन रवि शबेनूर को बैंक ले गया— खाता खुलवाने। वापस घर आए तो ज़रीना बहुत सारे कपड़े लिए खड़ी थी। "लीजिए आपा, ये सारे कपड़े तुम्हें सिलने हैं। 15 दिन बाद नदीम का निकाह जो है।"

"तो लड्डू कहाँ हैं? ज़रीना आपा!", रवि ने मुस्कुराते हुए कहा।

Chapter_ 12ndd.indd 21 08-Dec-2020 10:13:11 AM

■ देखिए, पढ़िए और बातचीत कीजिए

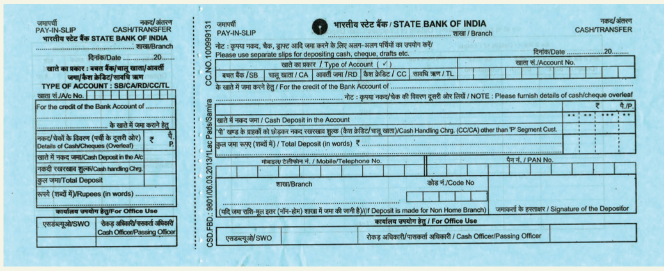

पैसे जमा करने की पर्ची

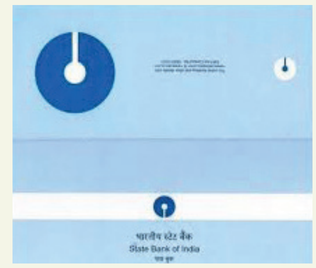

पासबुक

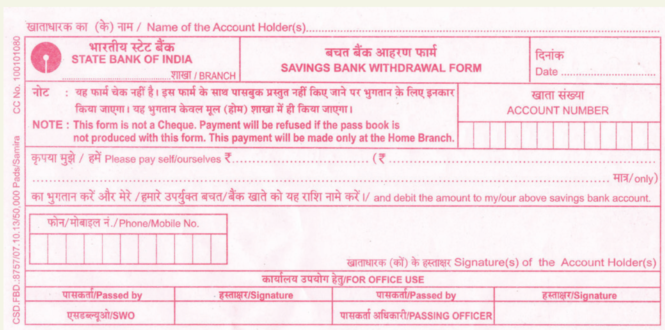

पैसे निकालने की पर्ची

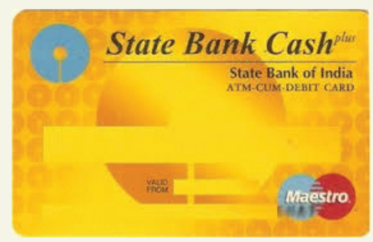

ए.टी.एम. कार्ड

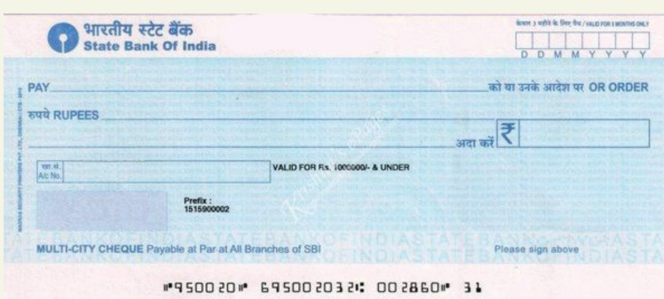

चैक

20 रुपये का नोट

ए.टी.एम. मशीन

Chapter_ 12ndd.indd 22 08-Dec-2020 10:13:18 AM

पढ़िए और लिखिए

नीचे दिए गए सवालों के जवाब लिखिए—

प्रश्न 1. शबेनूर परेशान क्यों थी?

प्रश्न 2. शबेनूर ने अपने पैसे कहाँ रखे थे? आप अपने पैसे कहाँ रखते हैं?

प्रश्न 3. रवि ने पैसा कहाँ रखने की बात की और क्यों?

प्रश्न 4. क्या आपका भी बैंक में बचत खाता है? अपने बैंक का नाम लिखिए।

प्रश्न 5. क्या आपको बैंक में पैसे के लेन-देन में किसी तरह की कोई परेशानी आती है? लिखिए।

Chapter_ 12ndd.indd 23 08-Dec-2020 10:13:19 AM

■ पढ़िए और बताइए

नीचे दिए गए सवालों के लिए सही जवाब पर सही का निशान (✓) लगाइए—

प्रश्न 1. पैसा चोरी होने के बाद शबेनूर को किस बात की चिंता होने लगी?

(क) उधार कैसे चुकाएगी

(ख) मकान का किराया कैसे देगी

(ग) सिलाई मशीन कैसे ठीक कराएगी

प्रश्न 2. शबेनूर को बैंक जाने में उलझन क्यों होने लगी?

(क) लंबी लाइन के कारण

(ख) दूरी के कारण

(ग) कागज़ भरने के कारण

प्रश्न 3. रवि के पैरों के तले ज़मीन क्यों खिसक गई?

(क) रवि ने शबेनूर को पैसे उधार दिए थे

(ख) शबेनूर अब इतना पैसा नहीं कमा पाएगी

(ग) शबेनूर का भारी नुकसान हो गया था

■ सोचिए, बताइए और लिखिए

प्रश्न 1. नीचे दी गई बातों का क्या मतलब है? इन वाक्यों का इस्तेमाल आप कब-कब करते हैं?

(क) आम के आम, गुठलियों के दाम

(ख) पाई-पाई जोड़ना

(ग) पैरों तले ज़मीन खिसकना

(घ) दिल धक से रह जाना

Chapter_ 12ndd.indd 24 08-Dec-2020 10:13:19 AM

प्रश्न 2. क्या कभी आपके साथ ऐसा हुआ है कि आपके मेहनत से कमाए हुए पैसे चोरी हो गए हों? कहीं गिर गए हों? अपना कोई अनुभव लिखिए।

Chapter_ 12ndd.indd 25 08-Dec-2020 10:13:19 AM

पढ़िए और लिखिए

नीचे वित्तीय साक्षरता और बैंक से जुड़ी कुछ ज़रूरी बातें बताई गई हैं। इन्हें पढ़िए।

वित्तीय साक्षरता— मतलब क्या?

- आमदनी और खर्च में तालमेल बिठाना
- बचत के प्रति जागरूक होना

आप क्या कर सकते हैं?

- आमदनी, खर्च और बचत का लेखा-जोखा रखिए।
- गैर ज़रूरी खर्चों से बचिए।
- बचत की आदत डालिए।
- बैंक या डाकघर में खाता खोलिए।
- अपनी बचत को सही जगह जमा कीजिए।

वित्तीय साक्षर बनने से क्या लाभ होगा?

- आगे आने वाले खर्चे को पूरा करने के लिए पहले से तैयार रहेंगे।
- खर्चों को काबू में लाएँगे।
- समझदारी से खर्च कर पाएँगे।
- अपनी ज़रूरतों को पहचान सकेंगे।

बैंक में खाता खोलने के लाभ

- आप अपनी बचत को सुरक्षित रूप से जमा रख सकते हैं
- जमा रशि पर ब्याज मिलता है
- ज़रूरत पड़ने पर जमा राशि निकाल सकते हैं।

बैंक में खाता खोलने के लिए क्या-क्या चाहिए

- फ़ोटो
- आधार कार्ड
- पैन कार्ड/ वोटर आई कार्ड

बैंक में खाता खुल जाने पर आपको क्या-क्या बैंक से मिलेगा?

- चैक बुक
- पास बुक
- ए.टी.एम. कार्ड

■ सही शब्द से वाक्य पूरे कीजिए—

1. वित्तीय साक्षर होने का मतलब है, ______________।
2. खाता ______________ में या ______________ में खोलना चाहिए।
3. अपनी ______________ के हिसाब से खर्च करना चाहिए।
4. जमा राशि पर ______________ मिलता है
5. बैंक में खाता खोलने के लिए ______________ , ______________ और ______________ की ज़रूरत होती है।

■ भीम ऐप (BHIM)

भीम ऐप (BHIM) पैसों के लेन-देन का मोबाइल ऐप है। इसका मतलब है कि भीम ऐप एक तरह की सुविधा है, जिसमें आप अपने मोबाइल के ज़रिए पैसे का लेन-देन कर सकते हैं। इसे ई-पेमेंट भी कहते हैं। दूर बैठे किसी व्यक्ति को पैसे भेजने हों, पैसे लेने हों, बच्चों के स्कूल की फ़ीस देनी हो, किराने की दुकान वाले को पैसा देना हो, किसी लोन का पैसा देना हो, यह सब आप भीम ऐप के ज़रिए कर सकते हैं। सबसे पहले आपको अपने मोबाइल में भीम ऐप को डाउनलोड और इंस्टॉल करना होगा। इसमें आप हिंदी के साथ-साथ 12 भारतीय भाषाओं में भी काम कर सकते हैं। इस ऐप में आप भारतीय स्टेट बैंक के साथ दूसरे लगभग 30 भारतीय बैंक खातों का इस्तेमाल कर सकते हैं।

(*स्रोत*— https:// https://www.npci.org.in/www.npci.org.in/ https://www.npci.org.in/product-overview/bhim-product-overview)

Chapter_ 12ndd.indd 27 08-Dec-2020 10:13:20 AM

पढ़ने के लिए

अनीता, तुम इतनी परेशान क्यों हो?
मैं हर बार अपने पति को याद दिलाती हूँ कि बिजली और पानी का बिल भरना मत भूलना। लेकिन वे हर बार भूल जाते हैं। आज आखिरी तारीख है और अब मुझे बारिश में जाना होगा।

अच्छा तो यह बात है। अरे, तुम घर बैठे ही जल्दी से भारत बिल पे से ऑनलाइन ही पैसे भर सकती हो।
क्या यह इतना आसान है।
यह आसान भी है और सुरक्षित भी। भारत बिल पे!
BHARAT BILLPAY

28

मेरे शब्द

शिक्षक-निर्देश— 'वित्तीय साक्षरता' विषय को समेटते हुए बातचीत कीजिए। शिक्षार्थियों से पूछकर इस विषय से जुड़े तीन-चार शब्द लिखिए। ये शब्द उनकी अपनी भाषा के भी हो सकते हैं, जैसे— 'रुपया' के लिए 'रूपैय्या' आदि।

For the Facilitator: Conclude the theme *Vittiya Saksharata* through discussion. Write 3-4 words related to this theme by asking the learners. These words can be from their own language also. For example– *Rupaiyya* for *Rupaya* etc.

Chapter_ 12ndd.indd 29 08-Dec-2020 10:13:22 AM

■ शबेनूर की पड़ोसी ज़रीना उससे पूछती है कि बैंक में खाता खोलने से क्या फ़ायदा है?

शबेनूर – बैंक खाते के कुछ फ़ायदे हैं, जैसे —

- हम अपनी बचत को सुरक्षित रूप से जमा रख सकते हैं।
- जमा राशि पर ब्याज मिलता है।
- ज़रूरत पड़ने पर बैंक जाकर या ए.टी.एम. से जमा राशि निकाल सकते हैं।
- इंटरनेट के माध्यम से बिना पैसे निकाले लेन-देन कर सकते हैं।
- इंटरनेट के माध्यम से बिल भर सकते हैं, रेलगाड़ी के टिकट भी खरीद सकते हैं।

ज़रीना – कितने पैसे जमा किए और कितने निकाले, यह सब हिसाब कैसे रखते हैं?

शबेनूर – वैसे तो मैं एक डायरी में लिख लेती हूँ, पर बैंक हमें एक पासबुक देता है जिसमें बैंक ही हिसाब दर्ज कर देता है।

शबेनूर की डायरी— बैंक का हिसाब

15 फरवरी	जमा किए 2000
18 फरवरी	निकाले 500
	बचे 1500
4 मार्च	निकाले 1000
	कुल 2500
11 मार्च	निकाले 600
	बचे 1900
17 मार्च	निकाले 700
	बचे 1200

शबेनूर की पासबुक

दिनांक	विवरण	जमा राशि	निकासी	शेष
15.0.2.2018	नकद	2000		2000
18.0.2.2018	नकद		500	1500
04.03.2018	नकद	1000		2500
11.03.2018	नकद		600	1900
17.03.2018	नकद		700	1200

यदि शबेनूर ने 4 अप्रैल को 2500 रुपये जमा किए तो बैंक इसे पासबुक में कहाँ दर्ज करेगा? शबेनूर के खाते में कुल कितने रुपये हो जाएँगे?

शिक्षक-निर्देश— चर्चा करें कि बैंक खाता आसानी से खोला जा सकता है। इसके लिए दो फ़ोटो और वोटर कार्ड, आधार कार्ड या अन्य कोई फ़ोटो पहचान-पत्र ज़रूरी है। जन-धन योजना में बिना रुपयों के भी खाता खोला जा सकता है।

इस प्रकार अन्य राशि जमा करने एवं निकालने पर पासबुक में राशि दर्ज होने की स्थिति तथा शेष राशि पता करने के लिए और प्रश्न पूछें और उन पर चर्चा करें।

For the Facilitator: Discuss with learners that bank account can easily be opened these days. They need two photos, Voter card, Aadhar card or any ID Proof to open the bank account. Also, zero balance account can be opened under Jandhan Yojna.

Ask similar question to learners know the balance, the amount of passbook recorded on depositing and withdrawing the amount.

Chapter_ 12ndd.indd 30 08-Dec-2020 10:13:24 AM

■ **बैंक खाते में पैसे जमा करना – इसके लिए एक जमा पर्ची भरनी पड़ती है। चित्र को देखकर जमा पर्ची को समझिए।**

जमा पर्ची

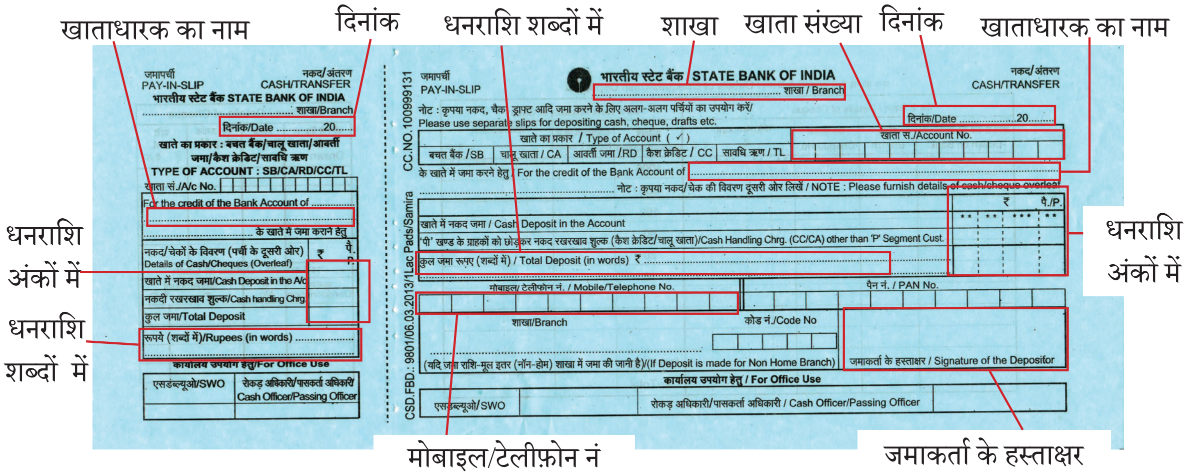

■ **बैंक खाते से पैसे निकालना – इसके लिए एक पर्ची भरनी पड़ती है। चित्र को देखकर पैसा निकालने वाली पर्ची को समझिए –**

पैसा निकालने की पर्ची

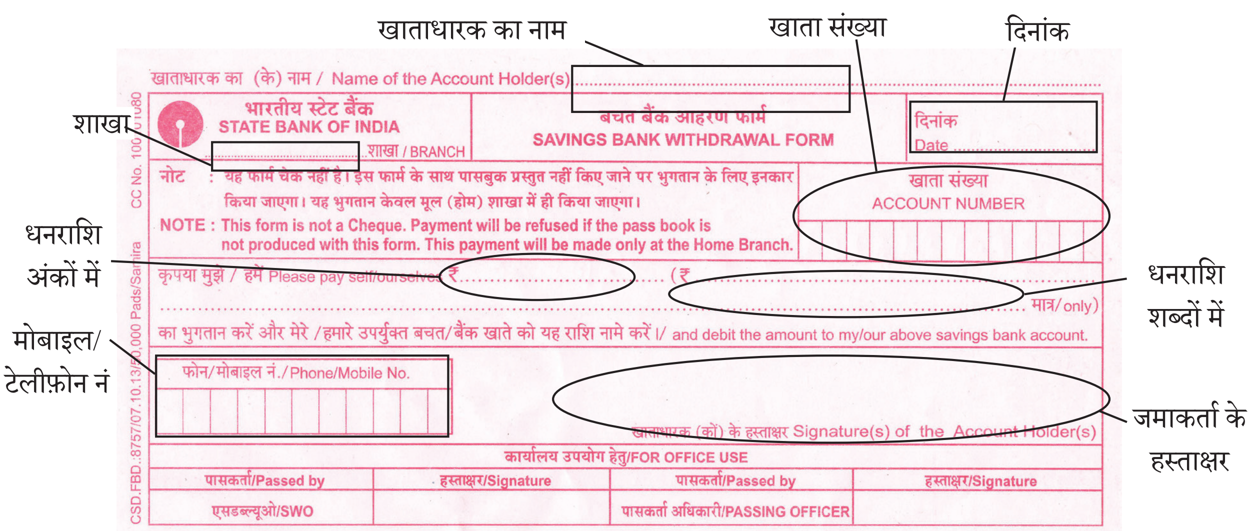

पैसे निकालने के लिए ए.टी.एम. कार्ड या चैक का प्रयोग किया जा सकता है।

शिक्षक-निर्देश— शिक्षार्थियों को प्रोत्साहित करें कि वे बैंक संबंधी फ़ार्म जैसे कि चैक/ जमा पर्ची/ पैसे निकालने की पर्ची/ पासबुक/ खाता खुलवाने का फ़ार्म को पढ़ना और स्वयं भरना सीखें।

For the Facilitator: Encourage the learner to read the bank related forms such as Cheque/Deposit slip/ Withdrawal slip/ Passbook/ Account opening form and learn how to fill these forms.

Chapter_ 12ndd.indd 31 08-Dec-2020 10:13:28 AM

■ **चैक – बैंक खाते से स्वयं रुपये निकालने अथवा किसी अन्य को भुगतान करने के लिए चैक का उपयोग किया जा सकता है।**

चैक कैसे भरें

स्वयं (यदि खाताधारक को स्वयं पैसा लेना है)

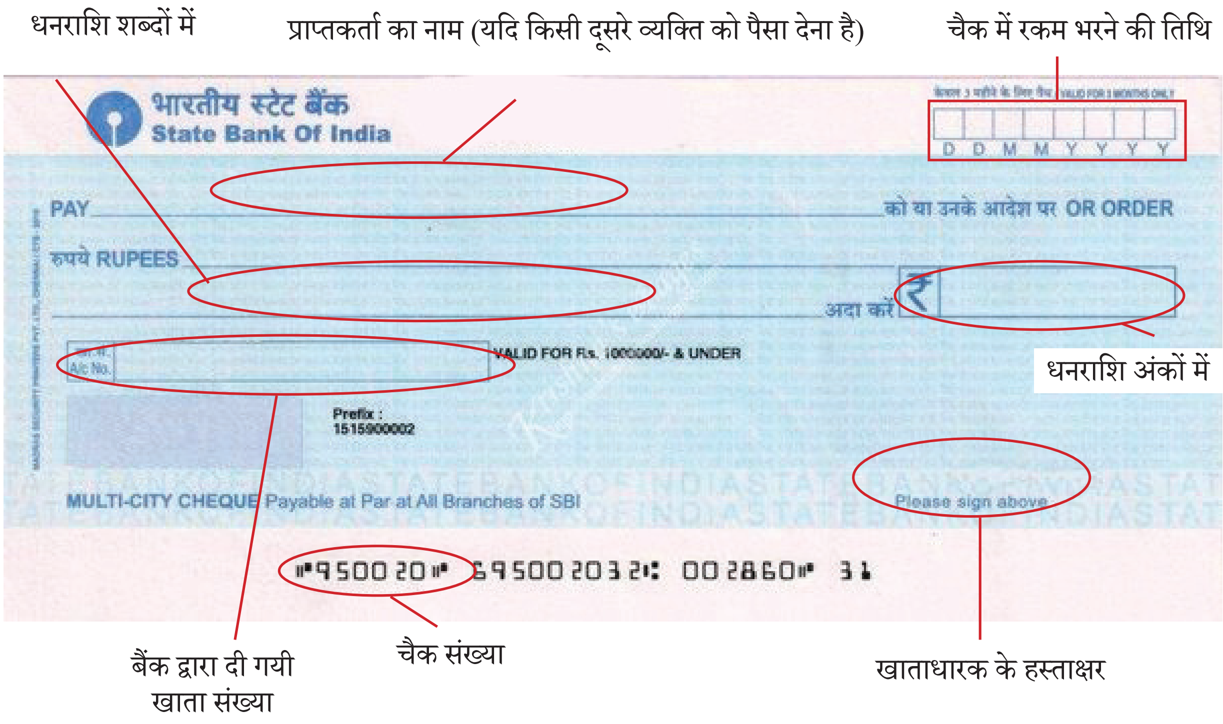

Chapter_ 12ndd.indd 32 08-Dec-2020 10:13:28 AM

मिलकर पढ़िए

दान का हिसाब

एक था राजा। राजा जी लकदक कपड़े पहनकर यूँ तो हज़ारों रुपए खर्च करते रहते थे, पर दान के वक्त उनकी मुट्ठी बंद हो जाती थी।

एक बार उस देश में अकाल पड़ गया। लोग राजा के पास मदद के लिए गए। लोगों ने कहा, "महाराज, राजभंडार से हमारी सहायता करने की कृपा करें, जिससे हम लोग दूसरे देशों से अनाज खरीदकर अपनी जान बचा सकें।"

राजा ने कहा, "आज तुम लोग अकाल से पीड़ित हो, कल पता चलेगा, कहीं भूकंप आया है। इस तरह सभी की सहायता करते-करते जब राजभंडार खत्म हो जाएगा तब खुद मैं ही दिवालिया हो जाऊँगा।"

यह सुनकर सभी निराश होकर लौट गए।

इधर अकाल का प्रकोप फैलता ही जा रहा था। न जाने रोज़ कितने ही लोग भूख से मरने लगे। लोग फिर राजा के पास पहुँचे। उन्होंने राजसभा में गुहार लगाई, "दुहाई महाराज! भगवान की कृपा से लाखों रुपए राजकोष में मौजूद हैं। जैसे धन का सागर हो। उसमें से एक-आध लोटा ले लेने से महाराज का क्या नुकसान हो जाएगा!"

Chapter_ 12ndd.indd 33 08-Dec-2020 10:13:30 AM

राजा ने कहा, "राजकोष में अधिक धन है तो क्या उसे दोनों हाथों से लुटा दूँ?"

एक अन्य व्यक्ति ने कहा, "महल में प्रतिदिन हज़ारों रुपए इन सुगंधित वस्त्र, मनोरंजन और महल की सजावट में खर्च होते हैं। यदि इन रुपयों में से ही थोड़ा-सा धन ज़रूरतमंदों को मिल जाए तो उन दुखियों की जान बच जाएगी।

यह सुनकर राजा को क्रोध आ गया। वह गुस्से से बोला, ''मेरा रुपया है, मैं चाहे उसे उबालकर खाऊँ चाहे तलकर! मेरी मर्ज़ी।''

राजा का क्रोध देखकर लोग वहाँ से चले गए।

दो दिन बाद न जाने कहाँ से एक बूढ़ा संन्यासी राजसभा में आया। उसने राजा को आशीर्वाद देते हुए कहा, "दाता कर्ण महाराज! बड़ी दूर से आपकी प्रसिद्धि सुनकर आया हूँ। संन्यासी की इच्छा भी पूरी कर दें।" अपनी प्रशंसा सुनकर राजा बोला, "ज़रा पता तो चले तुम्हें क्या चाहिए?"

संन्यासी ने कहा, "मैं तो संन्यासी हूँ। मैं अधिक धन का क्या करूँगा! मैं राजकोष से बीस दिन तक बहुत मामूली भिक्षा प्रतिदिन लेना चाहता हूँ। मेरा भिक्षा लेने का नियम इस प्रकार है, मैं पहले दिन जो लेता हूँ, दूसरे दिन उसका दुगुना, फिर तीसरे दिन उसका दुगुना, फिर चौथे दिन तीसरे दिन का दुगुना। इसी तरह से प्रतिदिन दुगुना लेता जाता हूँ। भिक्षा लेने का मेरा यही तरीका है।"

राजा बोला, "तरीका तो समझ गया। मगर पहले दिन कितना लेंगे, यही असली बात है।" संन्यासी ने हँसते हुए कहा, "महाराज, मैं लोभी नहीं हूँ। आज मुझे एक रुपया दीजिए,

Chapter_ 12ndd.indd 34 08-Dec-2020 10:13:31 AM

दान का हिसाब

पहला दिन	1 रुपया
दूसरा दिन	2 रुपए
तीसरा दिन	4 रुपए
चौथा दिन	8 रुपए
पाँचवाँ दिन	16 रुपए
छठा दिन	32 रुपए
सातवाँ दिन	64 रुपए
आठवाँ दिन	128 रुपए
नवाँ दिन	256 रुपए
दसवाँ दिन	512 रुपए
ग्यारहवाँ दिन	1024 रुपए
बारहवाँ दिन	2048 रुपए
तेरहवाँ दिन	4096 रुपए
चौदहवाँ दिन	8192 रुपए
पंद्रहवाँ दिन	16384 रुपए
सोलहवाँ दिन	32768 रुपए
सत्रहवाँ दिन	65536 रुपए
अठारहवाँ दिन	131072 रुपए
उन्नीसवाँ दिन	262144 रुपए
बीसवाँ दिन	524288 रुपए
कुल	**1048575 रुपए**

फिर बीस दिन तक दुगुने करके देते रहने का हुकुम दे दीजिए।"

यह सुनकर राजा, मंत्री और दरबारी सभी की जान में जान आई। राजा ने हुक्म दे दिया कि संन्यासी के कहे अनुसार बीस दिन तक राजकोष से उन्हें भिक्षा दी जाती रहे।

राजा के आदेश के अनुसार राजभंडारी प्रतिदिन हिसाब करके संन्यासी को भिक्षा देने लगा। इस तरह दो दिन बीते, दस दिन बीते। दो सप्ताह तक भिक्षा देने के बाद भंडारी ने हिसाब करके देखा कि दान में काफ़ी धन निकला जा रहा है। यह हिसाब उन्होंने मंत्री को बताया।

मंत्री ने पूछा, "कुल मिलाकर कितना हुआ?"

भंडारी ने हाथ जोड़कर कहा, "जी, दस लाख अड़तालीस हज़ार पाँच सौ पिचहत्तर रुपए।"

मंत्री गुस्से में बोला, "मज़ाक कर रहे हो? "यदि संन्यासी को इतने रुपए दे दिए तब तो राजकोष खाली हो जाएगा।"

अब वे राजा के पास गए। राजा ने पूछा, क्या बात है? "

मंत्री बोले, "महाराज, राजकोष खाली होने जा रहा है।"

राजा ने पूछा, "वह कैसे?"

मंत्री ने सारा हिसाब दिखा दिया।

राजा ने उसे एक बार देखा, दो बार देखा, इसके बाद वह बेहोश हो गया। काफ़ी कोशिशों के बाद उनके होश में आ जाने पर लोग संन्यासी को बुलाने दौड़े।

Chapter_ 12ndd.indd 35 08-Dec-2020 10:13:31 AM

संन्यासी के आते ही राजा रोते हुए उनके पैरों पर गिर पड़ा। बोला, "दुहाई है संन्यासी महाराज! अगर आपको बीस दिन तक भिक्षा दी गई तो राजकोष खाली हो जाएगा। फिर राज-काज कैसे चलेगा!" संन्यासी ने गंभीर होकर कहा, "इस राज्य में लोग अकाल से मर रहे हैं। मुझे उनके लिए केवल पचास हज़ार रुपए चाहिए। वह रुपया मिलते ही मैं समझूँगा मुझे मेरी पूरी भिक्षा मिल गई है।"

राजा ने कहा, "परंतु उस दिन एक आदमी ने मुझसे कहा था कि लोगों के लिए दस हज़ार रुपए ही बहुत होंगे।"

संन्यासी ने कहा, "मगर आज मैं कहता हूँ कि पचास हज़ार से एक पैसा कम नहीं लूँगा।"

राजा गिड़गिड़ाया, मंत्री गिड़गिड़ाए, सभी गिड़गिड़ाए। मगर संन्यासी अपने वचन पर डटा रहा। आखिरकार लाचार होकर राजकोष से पचास हज़ार रुपए संन्यासी को देने के बाद ही राजा की जान बची।

पूरे देश में खबर फैल गई कि अकाल के कारण राजकोष से पचास हज़ार रुपए राहत में दिए गए हैं। सभी ने कहा, "हमारे महाराज कर्ण जैसे ही दानी हैं।"

– *सुकुमार राय*

(स्रोत— *रिमझिम*, कक्षा-4, एन.सी.ई.आर.टी.)

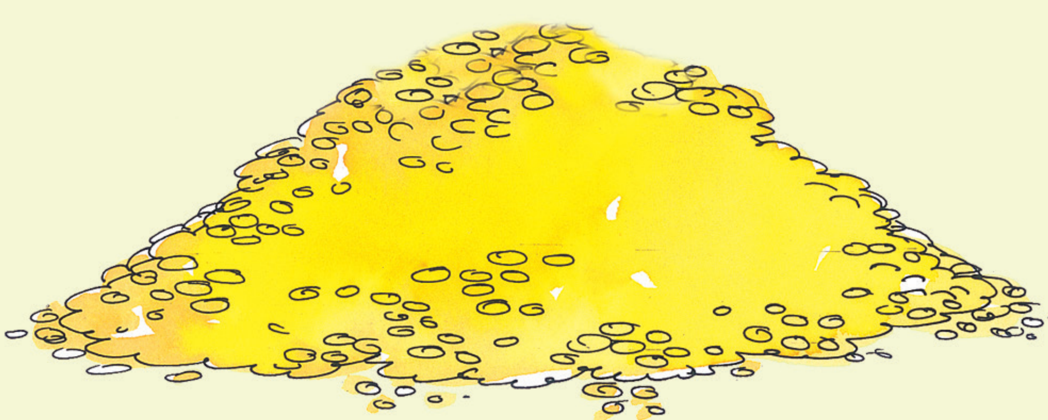

13 डिजिटल साक्षरता

आप सीखेंगे

- डिजिटल अंकों की पहचान एवं लिखना
- चित्र में प्रदर्शित आँकड़ों की समझ
- मोबाइल फ़ोन से संबंधित दैनिक जीवन की समस्या हल करना।

डिजिटल दुनिया

"माँ, चलो न! तुम सारा दिन काम में लगी रहती हो। हमारे साथ होली कब खेलोगी, कल? पापा भी नहीं आ रहे इस बार!", तोशी ने गीता का हाथ खींचते हुए कहा। इधर से सुहानी भी गीता को खींचे चली जा रही थी। "चलो न माँ!" दोनों बच्चे अपनी माँ गीता के साथ होली खेलने को उतावले हो रहे थे। गीता ने दोनों बच्चों को प्यार से गले लगाया और कहा, "अच्छा बाबा, चलो!" गीता ने झटपट अपने हाथ पोंछे और आँगन में जाने लगी।

टिन-टिन। घर के दरवाज़े की घंटी बजी। "आती हूँ।" गीता आँगन से दरवाज़े की ओर मुड़ गई।

"अरे तुम? तुम्हें तो छुट्टी नहीं मिल रही थी! फिर कैसे? बच्चे तुम्हें देखेंगे तो बहुत खुश हो जाएँगे। कब से मेरे पीछे पड़े हैं— होली खेलो, होली खेलो!" गीता की खुशी देखते ही बनती थी।

दीपक दिल्ली में काम करता है। होली पर वह अपने घर आया है।

घर आते ही वह बच्चों के पास गया। बच्चे आँगन में पिचकारी से रंग डाल रहे थे।

"भई, हम भी रंग लगाएँगे!", दीपक ने कहा।

"पापा, आप आ गए!", कहते हुए बच्चे दीपक से लिपट गए। फिर घर के आँगन में जो धमाल मचा। बस पूछिए मत!

सब रंग में सराबोर थे; सुहानी, तोशी, गीता, दीपक, आँगन, दीवार, पौधे और चुनमुन बिल्ली भी।

फिर सबने पेटपूजा की और जमकर खीर, पूड़ी खाईं। दीपक ने अपने बैग में से बारी-बारी से तोशी और सुहानी के उपहार निकालकर दिए। वे दोनों उपहार देखकर बहुत खुश हुए।

"यह क्या है?", दीपक के हाथ में एक पैकेट देखकर गीता ने पूछा। "यह मोबाइल फ़ोन है, तुम्हारे लिए।", दीपक ने कहा। गीता बोली, "मेरे लिए? मेरे पास है तो सही एक मोबाइल! अब इस दूसरे का क्या करूँगी! यह तो मुझे चलाना भी नहीं आएगा! न जाने इसमें क्या-क्या है?" दीपक बोला, "इस्तेमाल करना शुरू करोगी तो धीरे-धीरे सब समझ में आ जाएगा।"

"अरे गीता, यह फ़ोन सिर्फ़ बात करने के लिए नहीं है, इससे और भी बहुत कुछ कर सकते हैं। फोटो खींचकर भेज सकते हैं। संदेश पढ़ सकते हैं, भेज सकते हैं। अब व्हाट्सऐप पर भी संदेश, फ़ोटो, वीडियो भेज सकते हैं। वीडियो बना सकते हैं, वीडियो देख सकते हैं। इससे फ़ोन पर बातें करते हुए एक-दूसरे को हम देख भी सकते हैं। और तो और, भीम ऐप से पैसों का

Chapter_ 13ndd Folder.indd 38 08-Dec-2020 10:13:47 AM

लेन-देन भी घर बैठे तुरंत हो सकता है।" दीपक ने समझाया।

"सच?", तुरंत गीता चहककर बोली।

"हाँ! और इससे कोई जानकारी चाहिए हो तो वह भी खोज सकते हैं। आस-पास कौन-कौन सी दुकानें हैं, अस्पताल हैं, स्कूल हैं, कौन-सी जगह कितनी दूर हैं, वहाँ जाने का रास्ता बोल-बोलकर बता देता है यह फ़ोन।", दीपक ने समझाया।

"ये तो बड़े काम की चीज़ है! अब इस फ़ोन से ये सारे काम कैसे होते हैं, पहले मुझे ये सीखने दो। लाओ, मुझे दो।"

इसके बाद दीपक ने गीता को एस.एम.एस. यानी संदेश टाइप करना और भेजना सिखाया। फिर फ़ेसबुक पर अपना पेज दिखाया। उसमें तरह तरह की तस्वीरें थीं। उसने उसे व्हाट्सऐप चलाना भी सिखाया। यूट्यूब पर एक अच्छा वीडियो दिखाया। फिर उसने फ़ोन से तरह-तरह की जानकारी हासिल करने का तरीका बताया।

गीता की खुशी का ठिकाना नहीं रहा। उसे लग रहा था कि अब दुनिया बहुत छोटी होकर उसके मोबाइल फ़ोन में सिमट आई है।

बातचीत के लिए

1. क्या आप मोबाइल का इस्तेमाल करते हैं?
2. आप किन-किन कामों के लिए मोबाइल का इस्तेमाल करते हैं?
3. आपके अनुसार मोबाइल के क्या-क्या उपयोग हैं?
4. किसी ऐसी घटना के बारे में बताइए जब मोबाइल के होने से किसी काम को करने में सुविधा हुई हो।
5. मोबाइल का इस्तेमाल करते समय आप कौन-कौन सी सावधानियाँ बरतते हैं?
6. क्या आपको भी ऐसा लगता है कि अब दुनिया बहुत छोटी हो गई है।

For Conversation

1. Do you use mobile?
2. For what purposes do you use mobile?
3. According to you, what are the uses of mobile?
4. Share about an incidence when a mobile helped you in doing a work.
5. What safety measures do you follow while using mobile?
6. Do you also think that the world has become a smaller place?

Chapter_ 13ndd Folder.indd 39 08-Dec-2020 10:13:49 AM

■ देखिए, पढ़िए और बातचीत कीजिए

बताइए और निशान लगाइए आप अपने मोबाइल में इनमें से किन-किन का उपयोग करते हैं? सही का निशान लगाइए—

टेलीफ़ोन

मोबाइल फ़ोन

व्हाट्सऐप

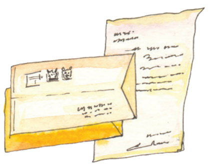
संदेश

केलकुलेटर

गूगल मेप

यू-ट्यब

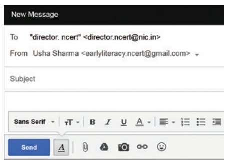
ई-मेल

फ़ेसबुक

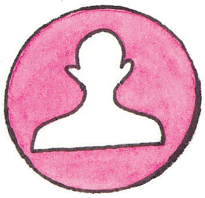
संपर्क सूची

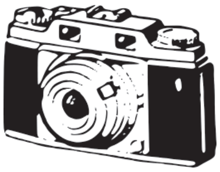
कैमरा

रेडियो

शिक्षक-निर्देश— शिक्षार्थियों के साथ एक-एक करके दिए गए गई चित्रों की पहचान करवाएँ। उन चित्रों के नीचे लिखे शब्द पढ़वाएँ। उनके इस्तेमाल के बारे में बातचीत करें। हो सकता है कि अनेक शिक्षार्थी इनके इस्तेमाल और कामों से परिचित न हों।

For the Facilitator: Ask the learners to identify the pictures. Ask them to read the words given below the pictures. Discuss about their uses with the learners. It could be possible that a lot of learners may not be familiar with their uses and functions.

लिखिए

नीचे दिए गए सवालों के जवाब लिखिए—

प्रश्न 1. बच्चे गीता से किस बात के लिए बार-बार कह रहे थे ?

प्रश्न 2. दीपक गीता के लिए क्या लाया?

प्रश्न 3. दीपक ने मोबाइल के क्या-क्या लाभ बताए?

प्रश्न 4. आप किन-किन कामों के लिए मोबाइल का इस्तेमाल करते हैं?

प्रश्न 5. मोबाइल का इस्तेमाल करते समय आप किन बातों का ध्यान रखते हैं?

पढ़िए और बताइए

नीचे दिए गए सवालों के लिए सही जवाब पर सही (✓) का निशान लगाइए—

प्रश्न 1. दीपक कहाँ काम करता था?

पटना

दिल्ली

भावनगर

Chapter_ 13ndd Folder.indd 41 08-Dec-2020 10:13:57 AM

प्रश्न 2. बच्चों ने होली पर क्या किया?

रंग डाला

गुब्बारे फेंके

गुलाल उड़ाया

प्रश्न 3. मोबाइल से किसका लेन-देन किया जा सकता है?

पैसों का

संदेशों का

इन दोनों का

सोचिए और बताइए

प्रश्न 1. नीचे दिए गए वाक्यों का इस्तेमाल आप कब करते हैं? छाँटकर लिखिए—

पैरों तले ज़मीन खिसकना	दिल बाग-बाग होना	दिल धक से रह जाना	लाल-पीला होना
घी के दीए जलाना	खून खौलना	गदगद होना	आपे से बाहर होना

जब बहुत खुशी होती है	जब बहुत परेशानी होती है	जब बहुत गुस्सा आता है

Chapter_ 13ndd Folder.indd 42 08-Dec-2020 10:13:58 AM

■ पढ़िए और लिखिए

सावधान! बच्चे खेल रहे हैं।

एक दिन मोबाइल के लोकल विशेषज्ञ लोगों से मिलने बाज़ार जा पहुँचे। उन्होंने लोगों से कुछ सवाल किए और बदले में मिले जवाब! आइए, हम भी पढ़ें और जानें—

सवाल— आप लोग अपने-अपने फ़ोन में कितनी देर गेम खेलते हैं?

- जब तक मन करे तब तक
- जब तक मम्मी ना डाँटे तब तक
- बैटरी खत्म नहीं होती तब तक

सवाल— कौन-कौन से गेम खेलते हो?

वो भालू दौड़ता है ना वो... / जिसमें गुड़िया को सजाते हैं... / अरे जिसमें गोलियाँ चलानी होती हैं...

सवाल— कभी मोबाइल को लेकर कुछ हुआ क्या?

हाँ दीदी, जैसे मोबाइल का स्क्रीन टूट गया और मम्मी ने अपने बेटे को बोला कि जाओ दुकान पर बनवाकर ले आओ इसे... वो मोबाइल बनवा के आता है और रोड पर गेम खेलने लग जाता है...कहीं इससे उसका ध्यान सड़क पर ना रहा और उसे टक्कर लग गयी तो!

Chapter_ 13ndd Folder.indd 43 08-Dec-2020 10:14:10 AM

मेरे साथ क्या हुआ था पता है, स्कूल ले गया था मैं मोबाइल...सर जी को पता चल गया, पहले तो उनसे पिटा, फिर गुस्से में रास्ते पर मोबाइल चलाता हुआ आ रहा था, तो पैर गड्ढे में। मोबाइल दूर फिंका और मेरे चेहरे पर चोट लग गयी।

सवाल— इस गेम में मज़ा आता है या अब वाले गेम में?

अब वाले में...क्यूँकि इसमें असली का लगता है ना...ये साँप वाला ब्लैक एंड वाइट भी है... बस टाइमपास के लिए खेल लो...और बटन भी बार-बार दबाना पड़ता है... अब वाले में तो टच आसान भी है... और आराम से उड़ा दो... ज़्यादा मज़ा तो इन्हीं में आता है।

सवाल (युवा साथियों से)— कैसे मिलता है मोबाइल?

पहले वाले फ़ोन को घर से जब माँगते थे तो वो बस गेम थोड़ी देर खेलने के लिए माँगते थे... अब वाले फ़ोन में मज़ा तो आता है... लेकिन इसके साथ और भी चीज़ें मिल जाती हैं। कॉल भी कर लेते हैं, मेसेज (संदेश) भी कर लेते हैं, मूवी (फ़िल्म) भी देख लेते हैं और गेम तो है ही।

सवाल— तो क्या किसी के मम्मी-पापा ने कोई रोक-टोक की? कभी मोबाइल चलाने को मना किया? या कोई खतरा बताया?

दीदी, एक गेम आया ना...तो मम्मी बहुत डर गई थी...बोलती थी कि ये सब मत खेलना... ब्लू गेम। बाकी जब स्कूल से आते हैं तो हम फ़ोन ले लेते हैं और जब तक मम्मी फ़ोन छोड़ने को डाँटती नहीं है ना तब तक खेलते हैं। अब इंटरनेट वाले फ़ोन देने से मम्मी डरती है थोड़ा... कहती है, क्या से क्या आ जाता है इसमें... सिर्फ़ गेम खेलियो।

सवाल— कोई बहुत मजेदार बात, मोबाइल को लेकर?

हाँ, एक बड़ी मज़ेदार-सी बात हमें समझ आयी! बड़े भाई-बहन या मम्मी का ही फ़ोन ही अपना फ़ोन होता है, लेकिन वो जितनी देर घर में होता है...उतनी देर वो उनका अपना होता है। दूसरा,

Chapter_ 13ndd Folder.indd 44 08-Dec-2020 10:14:12 AM

सिर्फ़ मम्मी इतना कहती हैं कि जब कोई फ़ोन आए तो सीधा लेके मेरे पास आना।

हमने इस विश्व खेल दिवस पर खेल के मायने ढूँढ़ने की कोशिश की। पार्कों में, गलियों में, खेल के मैदानों, घर की देहरी पर खेलते हुए बच्चे अब नज़र आने बंद हो गए हैं। अब बच्चे इन्हीं जगहों पर मोबाइल के साथ खेलते हुए नज़र आने लगे हैं। ये बच्चे पैरों की दौड़ लगाने से धीरे-धीरे दूर होते जा रहे हैं। अब इन बच्चों कि उँगलियाँ तेज़ी से चलती हैं...मोबाइल पर! किन्हीं जगहों पर दोनों साथ-साथ चल रहे हैं, सड़क पर चलते हुए मोबाइल पर उँगलियाँ चलती हैं। इसलिए सावधान! क्यूँकि अब रास्ते पर चलते वाहनों को भी सावधान होने की ज़रूरत है।

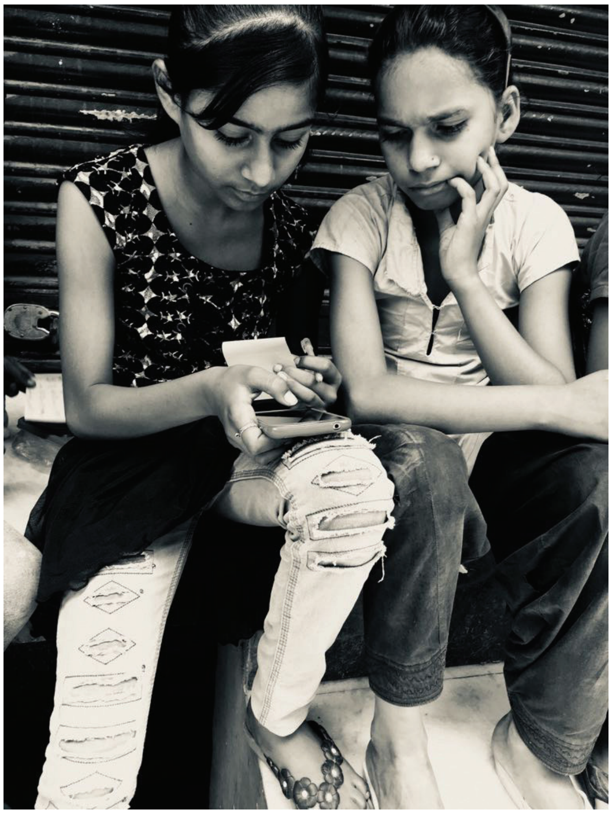

स्रोत— अंकुर सोसायटी फ़ॉर ऑल्टरनेटिव्ज़ इन एजुकेशन

■ पढ़कर बताइए

प्रश्न 1. बच्चे आजकल कहाँ खेलते हुए नज़र आते हैं?

प्रश्न 2. बच्चे मोबाइल पर क्या-क्या काम करते हुए नज़र आते हैं?

प्रश्न 3. बच्चों के माता-पिता उन्हें मोबाइल देते हुए क्यों डरते हैं?

मेरे शब्द

शिक्षक-निर्देश— 'डिजिटल साक्षरता' विषय को समेटते हुए बातचीत कीजिए। शिक्षार्थियों से पूछकर इस विषय से जुड़े तीन-चार शब्द लिखिए। ये शब्द उनकी अपनी भाषा के भी हो सकते हैं, जैसे– 'फ़ोन' के लिए 'फुनवा' आदि।

For the Facilitator: Conclude the theme *Digital Saksharata* through discussion. Write 3-4 words related to this theme by asking the learners. These words can be from their own language also. For example– *Funva* for *Phone* etc.

Chapter_ 13ndd Folder.indd 46 08-Dec-2020 10:14:13 AM

- किसी ऐसे अनुभव के बारे में बताइए जब आपको मोबाइल के कारण किसी काम में सुविधा हुई हो।

Chapter_ 13ndd Folder.indd 47 08-Dec-2020 10:14:13 AM

आप पैसा निकालने बैंक जाते हैं। बैंक में आपको एक टोकन दिया जाता है। आपका नंबर बारह है जो खिड़की पर लगी मशीन में इस प्रकार दिखता है।

12

रेलवे स्टेशन पर रेलगाड़ी संख्या, प्लेटफ़ार्म नंबर देखने के लिए भी ऐसे ही अंकों का इस्तेमाल किया जाता है।

गाड़ी संख्या	गाड़ी का नाम	प्लेटफ़ार्म नंबर
12398	महाबोधी एक्सप्रेस	8
12429	राजधानी एक्सप्रेस	5

इसी तरह के अंक मंडी में भाव देखने, तापमान देखने, मैट्रो स्टेशन इत्यादि पर स्क्रीन पर डिसप्ले होते हैं।

आपके कैलकुलेटर की स्क्रीन पर भी इसी तरह के अंक होते हैं। अंकों की बनावट को पहचानना आपके लिए ज़रूरी है।

0 1 2 3 4 5 6 7 8 9

स्क्रीन पर इसी बनावट के अंक डिसप्ले होते हैं यदि आपका टोकन नंबर एक सौ तेइस है तो बताइए वे स्क्रीन पर किस तरह डिसप्ले होगा।

आप अपनी फ़सलों की पैदावार की तुलना दूसरों से करते हैं या अपनी गेहूँ की पैदावार की तुलना पिछले वर्ष की पैदावार से करते हैं तो ऐसी तुलना करने के लिए चित्र बहुत उपयोगी होते हैं।

गीता— अरे वाह ! मेरे पास 1 बोरी गेहूँ ज़्यादा है।

देखकर ही गीता को कैसे पता लगा?

शिक्षक-निर्देश— शिक्षार्थियों की पहचान डिजिटल अंकों से कराएँ। उन्हें ऐसे अवसर दिए जाएँ जिसमें डिजिटल अंकों को पढ़ना एवं लिखना हो।

For the Facilitator: Introduce the learners with digital digits used to represent numbers. Provide opportunities for identifying and writing numbers in digital form.

Chapter_ 13ndd Folder.indd 48 08-Dec-2020 10:14:16 AM

■ **गीता को पता करना था कि किस दल की सरकार बनने वाली है। गीता टी.वी. पर चुनावी नतीजों से जुड़ी खबरें देख रही है। जिस दिन चुनाव के नतीजे आते हैं तो टी.वी. पर इस तरह के चित्र बने होते हैं जिससे यह समझना आसान हो जाता है कि कौन-से दल को ज़्यादा सीटें मिली हैं।**

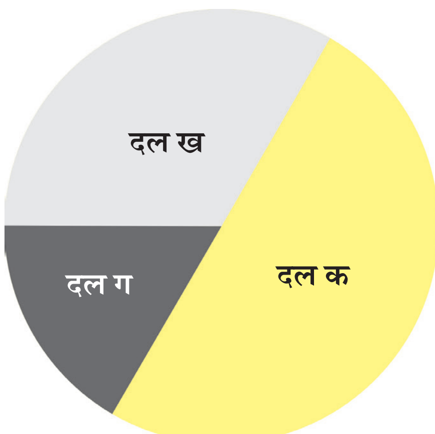

चित्र देखकर बताइए कि—

- सबसे ज़्यादा सीटें कौन-से दल को मिली हैं?
- सबसे कम सीटें कौन-से दल को मिली हैं?

■ **इसी तरह हम अपने आस-पास देखकर भी अन्य जानकारियाँ इकट्ठी करते रहते हैं। गीता ने अपने खेत में फलों के पेड़ भी लगाएँ हैं।**

चित्र देखकर बताओ कि—

- आम के पेड़ खेत के __________ भाग में लगे हैं।
- अमरूद के पेड़ खेत के __________ भाग में लगे हैं।
- नींबू के पेड़ खेत के __________ भाग में लगे हैं।

■ **गीता टी.वी पर ट्वेंटी-ट्वेंटी क्रिकेट मैच देख रही है। अंतिम छह ओवरों में बने रनों की संख्या को चित्र में दर्शाया गया है।**

▫▫▫▫▫ Chapter_ 13ndd Folder.indd 49 08-Dec-2020 10:14:17 AM

■ चित्र देखकर बताइए

- सबसे ज़्यादा रन किस ओवर में बने हैं? आपको ऐसा क्यों लगता है? ____________

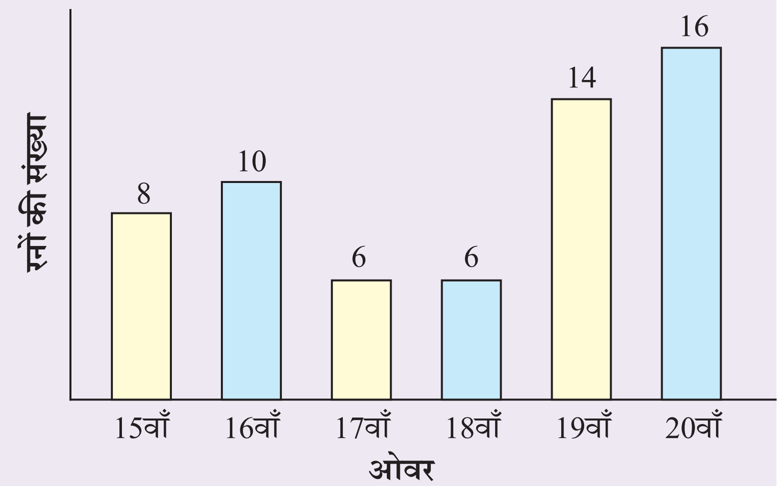

- किस ओवर में सबसे कम रन बने हैं?

  ____

- 10 रन किस ओवर में बने हैं?

  ____

- 15वें ओवर में कितने रन बने हैं?

  ____

■ मैच देखने के बाद गीता अपने मोबाइल में रीचार्ज कराने एक दुकान पर गई। उसे नीचे दिए गए प्लान में से एक प्लान चुनना था। नीचे दिए गए प्लान में उनकी कीमत और उनकी वैधता दी गई है।

प्लान	₹199	₹259	₹349
वैधता	28 दिन	45 दिन	60 दिन

(क) कौन-सा रीचार्ज गीता के लिए फ़ायदेमंद रहेगा?

(ख) अगर गीता ने ₹259 का रीचार्ज कराया और उसने दुकानदार को ₹500 का नोट दिया तो उसे कितने रुपऐ वापिस मिलेंगे?

(ग) गीता ने रीचार्ज 18 मार्च को करवाया और उस प्लान की वैधता 45 दिन थी तो उसे अगला रिचार्ज कब करवाना होगा?

मार्च

र	स	म	बु	बृ	शु	श
				1	2	3
4	5	6	7	8	9	10
11	12	13	14	15	16	17
18	19	20	21	22	23	24
25	26	27	28	29	30	31

अप्रैल

र	स	म	बु	बृ	शु	श
1	2	3	4	5	6	7
8	9	10	11	12	13	14
15	16	17	18	19	20	21
22	23	24	25	26	27	28
29	30					

Chapter_ 13ndd Folder.indd 50 08-Dec-2020 10:14:17 AM

मिलकर पढ़िए

स्रोत— https://www.npci.org.in/newsletter/July-Month/other-highlights.html

मोबाइल की दुनिया

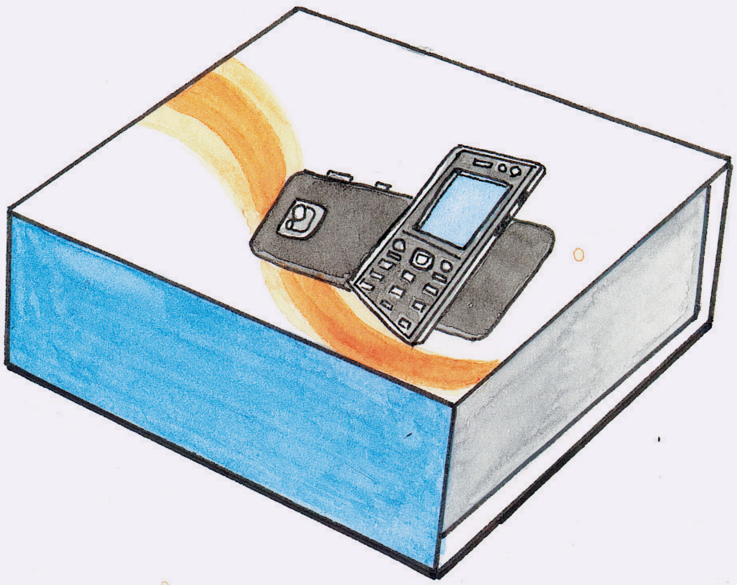

मैं हूँ मोबाइल। सागर का मोबाइल! मुझे अहसास हो गया था कि सागर मेरे पास है। उसने मुझे हाथ में जकड़कर उठा लिया। मैं उससे दुखी हो रहा था। वह क्या करना चाहता है, यह मुझे तो क्या, शायद उसे भी मालूम नहीं था। वह कभी गाने खोलता तो कभी वीडियो। कभी मैसेज खोलता तो कभी फेसबुक। सागर हमेशा ही रात तक मुझे जगाए रखता है। दो मिनट आँख क्या बंद हुई कि वह फिर से मुझे परेशान कर मेरी नींद को खराब कर देता है। कई बार तो मैं उससे परेशान होकर उसकी मनचाही चीज़ को खोलता ही नहीं। कभी-कभी अपनी इस बेबसी पर खुद से सोचता हूँ कि मैं ऐसा क्यों हूँ? किसने मेरा आविष्कार किया?

सागर की बातचीत का दौर रात तक मेरे ज़रिए चलता रहता। सागर अपने घर का इकलौता लड़का है। तीन बड़ी बहनें होने के बावजूद भी वह किसी से बात नहीं करता। ज़्यादातर अपने में ही खोया रहता है। उसके पापा ने शायद मुझको सागर का दोस्त बनाकर उसके हाथों में दिया था। मैं पहले सागर के पापा के पास में रहता था। कभी तो मुझे सागर से बड़ा लगाव होता तो कभी गुस्सा भी आता।

एक दिन सागर ने मुझ पर किसी का नंबर डायल किया। वह नंबर किसी पेंट वाले का था, जिसका नाम पनौती था। काफी देर तक उसने फ़ोन नहीं उठाया। जब उठाया तब सागर ने जैसे ही कहा, पनौती पेंट वाला, तो दूसरी तरफ़ से उसने एक ज़ोरदार डाँट मार दी। मैं भी समझ नहीं पाया कि आखिर हुआ क्या? लेकिन सामने वाला चुप ही नहीं हो रहा था। अब तो कोई भी चुप नहीं हो रहा था। दोनों के बीच बुरा-भला सिलसिलेवार चलता रहा और मैं उनके बीच बुरी तरह से फँस गया था। मुझे बिना वजह ही वह सब सुनना पड़ रहा था।

एक दिन मेरे दिमाग की बत्ती गायब हो गई थी। सागर ने मुझे ज़मीन पर ज़ोर से फेंककर मारते हुए कहा, "उफ़्फ़, किसी काम का नहीं है। यह अब फेंकने लायक हो चुका है।" मेरी

Chapter_ 13ndd Folder.indd 52 08-Dec-2020 10:14:19 AM

बैटरी ऐसे निकल गई, मानो मेरे शरीर से दिमाग निकल गया हो। थोड़ी देर के बाद में सागर ने मुझे दोबारा उठाकर मेरी बैटरी को मेरे शरीर से जोड़ा तो मेरी सिसकियों भरी आवाज़ निकली और दिमाग की बत्ती फिर से जल उठी।

मैं सागर के रोज़-रोज़ के इन झगड़ों से परेशान हो चुका था। सागर एक दिन लैंडलाइन फ़ोन ले आया। मैंने उसका नाम गोलू रखा— गोल जो था वह! मैं अब घंटों रैक पर पड़ा रहता। मुझ पर दिन-ब-दिन धूल भी अपना घर बनाती जा रही थी। अब सागर मेरी और देखता भी नहीं था। अगर कहीं जाना होता तो लोगों को दिखाने के लिए अपनी पैंट की जेब में रख लेता। उसकी जेब में कागज़ी नोट कम और सिक्के ज़्यादा होते। वे मेरी तरफ झूलते और मुझसे टकराते। मेरे आस-पास अँधेरा छा जाता फिर भी सागर मुझ पर ध्यान नहीं देता। कहीं शादी, पार्टी, दोस्तों के बीच से घूम-फिर कर आता और मुझे उस अंधेरे से निकालकर वहीं रैक में पटक देता और फिर वही गोलू लैंडलाइन से चिपककर बात करता। मैं कई बार उसे घूर-घूर कर देखता रहता। गोलू के नीचे कपड़ा बिछाकर बिस्तर किया हुआ है। वह आराम फरमाता रहता है और मैं धूल में पड़ा किताबों के रैक में कीड़े-मकोड़ों के साथ खेलता रहता हूँ। कई बार उन्हीं से बात भी करनी पड़ती और वे भी मेरी सुनकर उस गोलू लैंडलाइन के खिलाफ़ हो जाते थे।

एक दिन सागर जल्दी घर आ गया था। थोड़ा परेशान दिख रहा था। कमरे में यहाँ से वहाँ भटक रहा था। कभी खिड़की के बाहर देखता तो कभी बिस्तर पर बैठ जाता। कभी लैंडलाइन फ़ोन की तरफ़ जाता तो कभी उसे देखता रहता। जब काफ़ी देर तक फ़ोन नहीं आया तो उसने गोलू लैंडलाइन को उठाकर देखा। वह शायद खराब हो गया था। यह देख सागर मेरी ओर बढ़ा। मैं अंदर ही अंदर हँस रहा था। मैं सागर के अंदर की परेशानी को नहीं जान पा रहा था। वह एक नंबर मिलाकर मुझे ऊँचा हाथ करके यहाँ से वहाँ कर रहा था ताकि मैं नेटवर्क पकड़ लूँ। वह गुस्से में था। कमरे में आकर उसने नंबर फिर से मिलाया। नंबर मिला। फ़ोन बजा। बजता रहा। काफ़ी देर तक बजने के बाद भी किसी ने नहीं उठाया।

Chapter_ 13ndd Folder.indd 53 08-Dec-2020 10:14:20 AM

रात हो चुकी थी। उसने मुझे उठाया और बिस्तर पर बैठ गया। हाथ साफ़ करके उसने मुझे पूरा खोल डाला और बैटरी निकाल कर कभी कपड़े से साफ़ करता तो कभी फूँक मार-मार कर धूल निकालता। बहुत मेहनत के बाद मेरे दिमाग कि बत्ती जली! बत्ती मेरी जली और खुशी की चमक उसके चेहरे पर थी! सच, उसके चेहरे की खुशी देखने लायक थी। थोड़ी देर उसने मुझसे वही शाम वाला नंबर मिलाकर देखा लेकिन फिर खुद ही काट दिया।

सुबह के पाँच बज चुके थे। आज सागर बहुत खुश था। वह फटाफट नहा-धोकर तैयार हुआ और उसने आते ही मुझे प्यार से उठा लिया। उसके छूते ही मेरा एक-एक अंग खुशबू से महक गया। शायद सागर ने हद से ज़्यादा खुशबू वाला इत्र लगा लिया था। मुझे आज सागर का बर्ताव अच्छा लग रहा था। उसने मुझे आज जेब में नहीं डाला। बस, हाथ में रख मुझे अपने साथ लिए चल दिया।

जब सागर पार्टी में पहुँचा तो मुझ पर अलग-अलग रंग की तेज़ चमक वाली रोशनी पड़ रही थी! पार्टी में कुछ लोग नाच रहे थे तो कुछ अलग-अलग जगह पर लगी मेज़ के पास बैठ बातें कर रहे थे।

सागर की नज़र यहाँ से वहाँ घूम रही थी। तभी एक दम से मैं काँपा! मैं बज रहा था। शोर के कारण सागर महसूस नहीं कर पा रहा था। मैं बजता रहा और काफ़ी देर बजने के बाद खामोश हो गया।

पार्टी की जगह से घर सिर्फ़ दस मिनट की दूरी पर था। जेब में पड़ा मैं बाहर की आवाज़ सुन सकता था। ऐसा लग रहा था कि मैं सोने वाला हूँ। मेरे दिमाग की बत्ती बंद हो चुकी थी। जब मेरी आँख खुली तो देखा कि मैं किसी और के हाथ में हूँ जो एक नंबर मिला रहा है, लिखा है— पापा। नंबर मिला और वह आदमी बोला, "राजौरी चौक पर आ जाएँ। यहाँ आपका बेटा गिरा पड़ा है। शायद किसी ने ज़ोर की टक्कर मारी है। हालत खराब है। मैंने सागर की ओर देखा तो वह ज़मीन पर पड़ा था और उसके सिर से खून बह रहा था।

— भावना

Chapter_ 13ndd Folder.indd 54 08-Dec-2020 10:14:21 AM

विद्यया ऽमृतमश्नुते

एन सी ई आर टी
NCERT

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्
NATIONAL COUNCIL OF EDUCATIONAL RESEARCH AND TRAINING

Cover 1 and 4.indd 1 08-Dec-2020 12:23:03 PM